सितम्बर–२०२४ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ०५ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
सितम्बर–२०२४

गाय चाहती जैसे अपने बछड़ों को,
तुम भी वैसे ही चाहो सबको।
स्वामी दयानन्द कहते वेदों की,
शिक्षा यह पहुँचे सब जन को॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १५५

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

September - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०५

श्रीयुत् स्वामी रामभद्राचार्य जी का अज्ञान

१८

हिन्दी : माथे की बिन्दी

समाचार २१

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
१०	मनुष्य, मनुष्य कब बनता है?
१३	क्या ईश्वर चोर है?
१५	अद्वितीय महापुरुष योगेश्वर कृष्ण
२२	भीतर की चाँदनी
२५	वर्षा ऋतु में होने वाली व्याधि
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक -०५

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वृद्धों का लाठी परमेश्वर

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो रर म्भा शवस्पते।
उश्मसि त्वा सधस्थ आ।। - ऋग्वेद ८/४५/२०

ऋषिः –त्रिशोकः काण्वः।। देवता–इन्द्रः।। छन्दः–गायत्री।।

विनय- हे भगवन्! मैं बुड्ढा हूँ और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, परन्तु मैं सच्चे अर्थ में जीर्ण हूँ, पुराना हूँ, अतएव अनुभवी हूँ। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूँ- सब संसार भोग चुका हूँ, परन्तु अब मैं तुम्हें 'शवस्पते' करके सम्बोधन करता हूँ, क्योंकि मैंने सुदीर्घ

अनुभव से जान लिया है कि सब बलों के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बड़ा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बड़ा दल है, अतः जो मैं चाहूँ कर सकता हूँ; इस प्रकार दलबन्दी के बल को भी आजमाया है; कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबले में सब संसार को तुच्छ समझा है। शरीर-बलों और शस्त्र-बलों का तो कहना ही क्या है! पर इतने लम्बे, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभवों के बाद जीर्ण होकर-पुराना होकर अब समझा है कि सब बलों के स्वामी तो तुम ही हो। इसलिए अब और सब बलों का सहारा छोड़कर तुम्हारा सहारा पकड़ लिया है। हे मेरे एकमात्र बल! मुझसे अब क्षणभर के लिए भी दूर मत होओ। अब यदि मैं क्षणभर के लिए भी तुमको भूल जाता हूँ- अपने मानसिक विचार-नेत्र के सामने से क्षणभर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूँ, तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ- एकदम निस्सहाय हो जाता हूँ, अतः अब तो सतत् यही कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुड्ढे की लाठी जब आँखों के सामने पड़ी हो, पर उसकी पहुँच के परे पड़ी हो, तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुड्ढे के लिए और भी दुःखदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी! हे मुझ नर्बल के बल! हे मेरे एकमात्र सहारे! तुम अब सदा मेरे साथ रहो- सधस्थ बने रहो। तुमसे तनिक भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता।

शब्दार्थ- **शवसः पते**= हे सब बलों के स्वामिन्! **जिव्रयः**= बुड्ढा पुरुष **रम्भं न**= जैसे डण्डे को **त्वा**= उस प्रकार तेरा मैंने **ररम्भ**= अवलम्बन कर लिया है और अब मैं **त्वा**= तुझे **सधस्थे**= अपने समान स्थान में **आ**= आमने-सामने- आँखों के सामने **उश्मसि**= चाहता हूँ- देखना चाहता हूँ।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
परिशोधक एवं सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

श्रीयुत् स्वामी रामभद्राचार्य जी का अज्ञान

अनेक लोगों को यह भ्रम रहता है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज श्रीराम और श्रीकृष्ण को नहीं मानते। अनेकों पौराणिक भाइयों का यही मत रहा है परन्तु यह बात पूर्णतः असत्य है। अभी ताजा प्रकरण में स्वामी रामभद्राचार्य जी ने एक अवसर पर यह बात कही कि 'स्वामी दयानन्द जी की यह भूल थी कि उन्होंने रामायण और महाभारत को काल्पनिक माना।' उनका यह कहना यह द्योतित करता है कि उन्होंने महर्षि दयानन्द को जाना ही नहीं, उनके किसी ग्रन्थ को विशेष रूप से सत्यार्थ प्रकाश को भी नहीं पढ़ा। जो दयानन्द भारत के प्राचीन गौरव के सर्वाधिक प्रखर गायक हैं वे श्रीराम और श्रीकृष्ण को काल्पनिक कैसे मान सकते हैं? ये दोनों महापुरुष तो वेद की ऋचाओं के मूर्त रूप हैं। वेद का समस्त उदात्त उपदेश इनके जीवन में चरितार्थ है। आर्यसमाज श्रीराम एवं श्रीकृष्ण को ऐतिहासिक, वास्तविक एवं आदर्श पुरुष ठीक उसी प्रकार मानता है जैसे वाल्मीकि महर्षि ने श्रीराम को माना है। वे नारद से यही तो पूछते हैं-

'हे मुने! इस समय संसार में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है? सदाचार से युक्त समस्त प्राणियों का हितसाधक विद्वान्, सामर्थ्यशाली और एकमात्र प्रियदर्शन पुरुष कौन है? मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान और किसी की भी निन्दा नहीं करने वाला कौन है? तथा संग्राम में कुपित होने पर किससे देवता भी डरते हैं? (वाल्मीकि रामायण- प्रथम सर्ग)

और महर्षि नारद द्वारा इसके प्रत्युत्तर में एक ही नाम मिलता है वह है- श्रीराम

इन्हीं श्रीराम को महर्षि दयानन्द आदर्श उदात्त चरित्र का स्वामी मानते हैं। रामायण इन्हीं मर्यादा पुरुषोत्तम के व्यक्तित्व व कृतित्व की गौरवगाथा है। राम का ठीक यही स्वरूप महर्षि दयानन्द को स्वीकार्य है।

श्री रामभद्राचार्य जी तथा उनके जैसे सभी आचार्यों के और आर्यसमाज के, श्रीराम को मानने में मूलभूत अन्तर है कि वे राम के चित्र की पूजा करते हैं जबकि आर्यसमाज राम के चरित्र का उपासक है वे रामायण पाठ को मोक्ष का साधन समझते हैं जबकि आर्य समाज उन गुणों को जीवन में धारण करने में ही जीवन की धन्यता का अनुभव करता है। पौराणिक बन्धु रामायण पाठ से पाप-ताप का निवारण मानते हैं जबकि आर्यसमाज श्रीराम के जीवन में

उपस्थित गुणों को जिनका प्रकाशन रामायण पाठ से होता है, जीवन में धारण करने से पाप-ताप के निवारण की संभाव्यता को देखता है।

वाल्मीकि रामायण में बाल काण्ड-प्रथम सर्ग से पूर्व पाँच अध्यायों में यह बताया गया है कि रामायण पढ़ने से क्या लाभ होता है। हम नहीं कह सकते कि ये अध्याय वाल्मीकि महर्षि द्वारा लिखे गए अथवा किसी अन्य द्वारा। उन सैंकड़ों श्लोकों का सार यह है- 'जो रामायण का श्रवण करता है- वह सब पापों से मुक्त हो अपनी इक्कीस पीढ़ियों के साथ श्री रामचन्द्र जी के उस परमधाम में चला जाता है जहाँ जाकर मनुष्य को कभी शोक नहीं करना पड़ता।'

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द रामायण श्रवण के ऐसे महात्म्य को नहीं स्वीकारते यह पृथक् बात है, परन्तु रामायण, महाभारत को काल्पनिक मानते हैं यह बात तथ्य से परे है। महर्षि दयानन्द रामायण, महाभारत को क्रमशः श्री राम और श्री कृष्ण का इतिहास मानते हैं तथा इसके पात्रों को भी मान्यता देते हैं इसके प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश तथा उपदेश मंजरी (महर्षि के पूना-प्रवचन) में मिलते हैं।

१. महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में उन ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिन्हें पढ़ना चाहिए अथवा नहीं। इनमें पठन योग्य ग्रन्थों में वाल्मीकि रामायण के साथ महाभारत और विदुरनीति की गणना की गयी है। देखिए-

'तत्पश्चात् मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योगपर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तम सभ्यता प्राप्त हो, वैसे को काव्यरीति अर्थात् पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य, विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जायें। इनको एक वर्ष के भीतर पढ़ लें।

२. राजा जनक तथा पंचशिख मुनि आदि रामायण के पात्र हैं। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के पाँचवे समुल्लास में इनका उल्लेख किया है। इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता है कि दयानन्द रामायण, महाभारत और उनके पात्रों को काल्पनिक नहीं, वास्तविक उज्ज्वल इतिहास के रूप में स्वीकार करते हैं। देखिये-

'परन्तु जो विशेष उपकार एकत्र रहने से होता हो तो रहे। जैसे जनक राजा के यहाँ चार-चार महीने तक पंचशिखादि और अन्य संन्यासी कितने ही वर्षों तक निवास करते थे।'

३. पुनः सत्यार्थ प्रकाश ही के छठे समुल्लास में अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा देने के साथ विदुर प्रजागर तथा महाभारत को पढ़ने के महत्त्व का प्रतिपादन महर्षि निःसंकोच करते हैं। देखिये-

'यह संक्षेप से राजधर्म का वर्णन यहाँ किया गया है। विशेष वेद, मनुस्मृति के सप्तम-अष्टम और नवम अध्याय, शुक्रनीति, विदुरप्रजागर और महाभारत शान्तिपर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीति को धारण कर माण्डलिक अथवा सार्वभौम चक्रवर्त्ती राज्य करें।'

४. पुनः सातवें समुल्लास में श्रीकृष्ण के बारे में क्या लिखते हैं वह द्रष्टव्य है (यद्यपि यहाँ उन्होंने अवतारवाद का निषेध किया है)

'श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि जब-जब धर्म का लोप होता है तब-तब मैं शरीर धारण करता हूँ।

उत्तर- यह बात वेदविरुद्ध होने से प्रमाण नहीं। और ऐसा हो सकता है कि श्रीकृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं। क्योंकि **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** परोपकार के लिये सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है, तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।' अर्थात् महर्षि दयानन्द का मंतव्य है कि श्रीकृष्ण ऐतिहासिक हैं, आदर्श हैं, आप्त हैं, परन्तु अवतार नहीं हैं।

५. सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द आर्यावर्त्त देश की अवनति के कारणों पर विचार करते हुए उसके चक्रवर्ती स्वरूप पर भी प्रकाश डालते हैं और उसमें युधिष्ठिर तथा महाभारत की चर्चा अनेक बार है।

देखिये-

'महाराजे युधिष्ठिरजी के राजसूय-यज्ञ और महाभारत युद्धपर्यन्त यहाँ के राज्याधीन सब राज्य थे। सुनो! चीन का 'भगदत्त', अमेरिका का 'बब्रुवाहन', यूरोप के 'विडालाक्ष' अर्थात् मार्जार के सदृश आँखवाले, 'यवन' जिसको यूनान कह आये और ईरान का 'शल्य' आदि सब राजा राजसूय-यज्ञ और महाभारत युद्ध में आज्ञानुसार आये थे।'

६. अब देखिये यहाँ रामायण भी स्वीकृत है-

'जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहाँ के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया, तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया।' यहाँ रामायण के प्रमुख पात्रों का उल्लेख स्पष्ट है। - सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

७. स्वायंभुव राजा से लेकर पाण्डवपर्यन्त आर्य्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। - सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

'इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारतपर्यन्त चक्रवर्त्ती सार्वभौम राजा आर्य्यकुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्ध्र्यश्व, अश्वपति, शशविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्त्ती राजाओं के नाम लिखे हैं, वैसे स्वायम्भुवादि चक्रवर्त्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति, महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं। इसको मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है।' - सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

अब तनिक विचार तो करिए कि आचार्य दयानन्द ने महाभारत आदि इतिहास को मिथ्या बताने वालों को अज्ञानी और पक्षपाती माना है। ऐसे महामानव के बारे में यह प्रचारित करना कि वे रामायण और महाभारत को नहीं मानते थे, पूर्णतः असत्य कथन है।

८. और भी देखिये आर्यावर्त्त के पतन के कारणों पर विचार करते ऋषि लिखते हैं-

'जब नाश होने का समय निकट आता है तब उलटी बुद्धि होकर उलटे काम करते हैं। कोई उनको सूधा समझावे तो उलटा मानें और उलटी समझावें उसको सूधी मानें। जब बड़े-बड़े विद्वान्, राजे, महाराजे, ऋषि, महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये, तब विद्या का और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट होता चला।' - सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

९. आर्यावर्त्त देश की हानि कब और कैसे हुयी उसके बारे में ऋषि आगे सार रूप में लिख देते हैं-

'इस बिगाड़ के मूल महाभारत युद्ध से पूर्व एक सहस्र वर्ष से प्रवृत्त हुए थे।' - सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

१०. अब देखिये सत्यार्थ प्रकाश के दशवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द महाभारत के पात्रों का जिस प्रकार वर्णन करते हैं क्या उसे पढ़कर कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह कह सकेगा कि दयानन्द महाभारत को काल्पनिक मानते थे? आप भी देखिये-

'अर्थात् एक समय में व्यासजी अपने पुत्र शुक और शिष्य-सहित 'पाताल अर्थात् जिसको इस समय अमेरिका' कहते हैं, उसमें निवास करते थे।'

'श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पाताल में 'अश्वतरी' अर्थात् जिसको अग्नियान नौका कहते हैं, (उस पर) बैठ के पाताल में जाके महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को ले आये थे। धृतराष्ट्र का विवाह 'गान्धार' जिसको 'कंधार' कहते हैं वहाँ की राजपुत्री से हुआ। माद्री जो कि पाण्डु की स्त्री थी 'ईरान' के राजा की कन्या थी और अर्जुन का

विवाह पाताल में जिसको 'अमेरिका' कहते हैं वहाँ के राजा की लड़की उलोपी के साथ हुआ था। जो देशदेशान्तर, द्वीपद्वीपान्तर में न जाते होते, तो ये सब बातें क्योंकर हो सकतीं? मनुस्मृति में जो समुद्र में जाने वाली नौका पर 'कर' लेना लिखा है, वह भी आर्य्यावर्त्त से द्वीपान्तर में जाने के कारण है। और जब महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय-यज्ञ किया था, उसमें सब भूगोल के राजाओं को बुलाने को निमन्त्रण देने के लिये भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव चारों दिशाओं में गये थे।' - सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास

११. महाभारत के युद्ध को आर्यावर्त्त के पतन के लिए उत्तरदायी मानते हुए महर्षि चेतावनी देते हैं-

'क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पाँच सहस्र वर्ष के पहिले हुई थीं, उनको भी भूल गये? देखो! महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते-पीते थे। आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्ट-मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह महाराजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय।' - सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास

१२. पूना में महर्षि दयानन्द जी ने जो प्रवचन दिए थे उनमें से १४ उपदेश मंजरी के नाम से प्रकाशित हैं। उनमें दशवें प्रवचन के कुछ अंश देखें-

'रघु के पीछे राजा राम हुए इनका रावण से युद्ध हुआ, इनका इतिहास रामायण में वर्णन किया गया है।' कहिये स्वामी जी रामायण के बारे में महर्षि दयानन्द की मान्यता स्पष्ट हुयी अथवा नहीं?

आगे महाभारत के बारे में भी देखें-

'राजा शांतनु को ऐश्वर्य का बड़ा भारी अभिमान उत्पन्न हुआ और देश में व्यभिचार बढ़ गया। निष्कंटक राज्य होने के कारण शांतनु और भी विशेष अभिमानसंयुक्त हुआ। ..... इसके अनन्तर शांतनु विषयों में अत्यन्त आसक्त हो गया। सत्यवती के प्रति इसकी चालाकी का समाचार आप सब लोग जानते हैं, परन्तु शांतनु राजा होकर भी सत्यवती के पिता पर बल प्रयोग न कर सका। सत्यवती के पिता ने उनको डाँटा था। जब तक भीष्म ने अपना कुल हक सत्यवती के पुत्रों को देने का निश्चय नहीं किया तब तक सत्यवती के दरिद्र पिता ने राजा का कहना स्वीकार नहीं किया। इससे ही प्रकट हो सकता है कि प्राचीन आर्य मनुष्यों में कितनी स्वाधीनता थी और राजा लोग भी सामाजिक प्रबन्ध में किस प्रकार प्रबन्धकर्त्ता हुए थे। इस आर्यावर्त्त के राजाओं की नेकी वा नेकनामी संसार में फैल रही थी। योरूप और अमेरिका के कुछ राजा लोग इनकी सेवकाई में तत्पर हो, कर देते थे। अब सोचिये कि वर्त्तमान में देश की दशा कितनी गिर गयी है। ये सब बातें महाभारत के राजसूय और अश्वमेध पर्वों में वर्णित हैं।'

१३. श्रीराम और रामायण के बारे में सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखा है-

प्रश्न- रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापन किया है। जो मूर्त्तिपूजा वेदविरुद्ध होती तो 'रामचन्द्र मूर्त्तिस्थापन क्यों करते' और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर- रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम निशान भी नहीं था, किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम राजा ने मन्दिर बनवा, लिंग का नाम 'रामेश्वर' धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से विमान पर बैठ आकाश मार्ग से अयोध्या को आते थे, तब सीताजी से कहा है कि-

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः॥
सेतुबन्ध इति ख्यातम्॥ - वाल्मीकि. लंका काण्ड (युद्धकाण्ड सर्ग १२३/ श्लो. २०-२१)

'हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु व्यापक महान् देवों का देव 'महादेव' परमात्मा है, उसकी कृपा से

हमको सब सामग्री यहाँ प्राप्त हुई। और देख! यह सेतु हमने बाँधकर लंका में आके, उस रावण को मार, तुझको ले आये। इसके सिवाय वहाँ वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।' – सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास

अब पाठकगण देखें कि उपरोक्त अनेकानेक उदाहरणों से सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट है कि महर्षि दयानद जी निश्चित रूप से रामायण और महाभारत को प्रामाणिक मानते थे। हाँ! इनमें प्रक्षिप्त स्थलों की विद्यमानता को भी वे स्वीकारते थे।

यहाँ यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि रामायण तथा महाभारत में जो कुछ भी उपलब्ध है वह सब प्रामाणिक है ऐसा वे और आर्यसमाज के विद्वान् नहीं मानते हैं।

प्रमाण देखें

'महर्षि दयानन्द राजा भोज के हवाले से लिखते हैं-

व्यासजी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पाँच सहस्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण 'भारत' बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिता के समय में पच्चीस और मेरी आधी उमर में तीस सहस्र श्लोकयुक्त 'महाभारत' का पुस्तक मिलता है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊँट का बोझा हो जायगा और ऋषि-मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़के वैदिकधर्म विहीन होकर भ्रष्ट हो जायेंगे।' – सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११

अन्त में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण जी के चरित्र के ऊपर पुराणों द्वारा कलंक लगाया है उसका निवारण करते हुए जो लिखते हैं वह पढ़ने योग्य है-

देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण=बुरा काम श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त किया हो, ऐसा नहीं लिखा। – सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

खेद प्रकाशन- अगस्त-२४ के सत्यार्थ सौरभ के अंक में अपने सम्पादकीय में छपते-छपते के अन्तर्गत एक गुरुकुल की चर्चा करते हुए जिसके विद्यार्थियों ने आँख पर पट्टी बाँधते हुए नोटों के नम्बर पढ़कर बताये थे, का उल्लेख कर हमने उसकी प्रामाणिकता पर सन्देह किया था। गुरुकुल के आचार्य जी ने कल दूरभाष पर बताया उसका सार संक्षेप है कि यह विचित्र है पर सत्य है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है। अतः हम आचार्य जी से खेद प्रकाशित करते हैं। (इस तीसरी आँख के उद्बुद्ध होने के सत्य होने से चमत्कारों को लेकर आर्यसमाज की जो सोच रही है उस पर पुनर्विचार करना होगा। आगामी अंक में इस पर कुछ लिखने का प्रयास करेंगे।) - अशोक आर्य: सम्पादक- सत्यार्थ सौरभ

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

जब मनुष्य की करुणा का विस्तार होता है तभी वो सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है

प्रसिद्ध कवि नरोत्तमदास की चर्चित रचना है- सुदामा चरित। उसकी कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

देख सुदामा की दीन दसा,
करुना करि कै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं,
नैनन के जल सौं पग धोए।।

जब सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलने द्वारका पहुँचे तो उनकी विपन्नता व कृशकाय अवस्था देखकर कृष्ण जो स्वयं करुणा के सागर थे करुणा से भर उठे और रो दिए। उनके पैर पखारने के लिए परात में जो पानी लाया गया था उसे हाथ लगाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। क्योंकि कृष्ण की आँखों से इतने आँसू गिरे कि सुदामा के पैर धुल गए। यदि साहित्य की दृष्टि से देखें तो ये करुण रस का अनुपम उदाहरण है। करुण रस का स्थायीभाव शोक होता है अर्थात् मन में शोक के कारण करुण रस की उत्पत्ति होती है। हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय साहित्य इस प्रकार की रचनाओं से भरा हुआ है। करुणा मनुष्य के हृदय को किस प्रकार उदात्त बना देती है आदिकवि बाल्मीकि इसका प्रखर उदाहरण हैं। कहा जाता है कि एक बार बाल्मीकि ने देखा कि एक बहेलिए ने प्रेमरत क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया जिसे देखकर मादा जोर-जोर से विलाप करने लगी। इस विलाप को सुनकर बाल्मीकि का हृदय रो पड़ा। वे अत्यन्त व्यथित व आहत हो उठे और अचानक उनके मुख से निकला-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत्क्रोंचमिथुनादेकम् अवधी: काममोहितम्।।

अरे बहेलिए! तूने कामविमोहित मैथुनरत क्रौंच पक्षी को मारा है अतः तुझे कभी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी। इस घटना से बाल्मीकि का कवित्व जाग उठा। उन्होंने संसार की महानतम कृति रामायण की रचना की। इस सबका श्रेय उनके अन्दर उत्पन्न करुणा को ही जाता है। कविवर सुमित्रानन्दन पंत की कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी इसी ओर संकेत कर रही हैं-

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अंजान।।

इसी सन्दर्भ में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की एक कविता भिक्षुक का स्मरण हो रहा है-

वह आता-
दो टूक कलेजे के करता, पछताता,
पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर है एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी है सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाएँ।
भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता- भाग्य विधाता से क्या पाते?
घूट आँसुओं के पी कर रह जाते।

चाट रहे जूठी पाल वे सभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

क्या ये मात्र कुछ शब्द हैं? नहीं, ये केवल शब्द नहीं हैं। एक भिक्षुक व उसके बच्चों की दुर्दशा व पीड़ा को देखकर कवि के हृदय में उपजी करुणा का चित्रांकन हैं ये पंक्तियाँ। करुणा की इससे मार्मिक अभिव्यक्ति क्या होगी?

अब थोड़ा करुणा के अर्थ पर विचार करते हैं। जब हम दूसरों की पीड़ा को देखते हैं तो हमारे अन्दर भी पीड़ा का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। यह भाव हमें दूसरों की पीड़ा को दूर करने की प्रेरणा देता है। दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होना और उसको दूर करने के लिए उद्यत हो जाना ही वास्तविक करुणा है। यदि दूसरों की पीड़ा को देखकर हमारे अन्दर पीड़ा के भाव तो उत्पन्न होते हैं लेकिन तत्क्षण विलीन हो जाते हैं और हम उसके विषय में सोचते ही नहीं तो वो कैसी करुणा? जब हमारी संवेदना अथवा सहवेदना कुछ करने के लिए उद्यत करती है तभी हम करुण बन पाते हैं अन्यथा वह संवेदना अथवा सहवेदना दिखावा मात्र है।

अन्य क्षेत्रों की तरह करुणा के क्षेत्र में भी हमारे मानदण्ड हमारी सुविधानुसार अलग-अलग होते हैं। अपने निकटस्थ व्यक्तियों अथवा स्वजनों के लिए हममें करुणा का होना स्वाभाविक है लेकिन हम अपने नजदीकी व्यक्तियों के लिए दुःख में ही नहीं दुःख की कल्पना मात्र से भी द्रवित अथवा करुणाद्र हो उठते हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि दूसरों के वास्तविक दुःख और अपने स्वजनों के दुःख की कल्पना से दुःखी होना करुणा ही कहलाता है। जो भी हो आज समाज में करुणा नामक तत्त्व कम होता जा रहा है। हमारी करुणा दिखावा बनकर रह गई है। बेशक हम अपनों के लिए चिंतित अथवा व्याकुल हो उठते हैं लेकिन समाज के लिए हमारी चिंता का स्तर निरन्तर कमजोर होता जा रहा है। किसी व्यक्ति को पीड़ा में देखकर हम उसकी मदद करने की बजाय चुपचाप खड़े तमाशा देखना अधिक उचित समझते हैं। हद तो तब हो जाती है जब हम किसी पीड़ित अथवा असहाय की मदद करने की बजाय उस घटना का वीडियो बनाना ज्यादा जरूरी समझते हैं।

पिछले दिनों दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में ओलावृष्टि हुई। कई स्थानों पर काफी बड़े-बड़े और काफी मात्रा में ओले गिरे। कई समाचार पत्रों ने लिखा कि दिल्ली में बर्फबारी अथवा दिल्ली शिमला बना। दिल्ली में शिमला का आनंद। लोग भी धड़ाधड़ ओलावृष्टि के वीडियो बनाकर इधर से उधर भेजे रहे हैं। उनके आनन्द की सीमा नहीं। वास्तव में उन्हें ओलावृष्टि और बर्फबारी में अन्तर नहीं मालूम। ये दोनों अलग-अलग एवं परस्पर विरोधी स्थितियाँ हैं। बर्फबारी पर्वतीय जीवन और फसलों के लिए अनिवार्य है लेकिन ओलावृष्टि चाहे पहाड़ों पर हो अथवा मैदानी भागों में बर्बादी लाती है। अब ऐसे ज्ञानवान लोग करुणा को किस रूप में लेंगे कहना मुश्किल है।

एक पक्षी के वध और उसकी मादा के क्रन्दन पर बाल्मीकि अन्दर तक हिल जाते हैं। आज समाज में विभिन्न वर्गों पर हो रहे अत्याचार को देखकर हमारा कलेजा नहीं दहलता। देश में हर शहर और कस्बे तक में और कुछ हो या न हो देह व्यापार की गलियाँ जरूर मिल जाएँगी। देश में हर रोज न जाने कितनी मासूम लड़कियों को यातनाएँ देकर इस धंधे में उतार दिया जाता है? ये हमारे लिए केवल समाचार होते हैं। पढ़ते हैं और समाचार पत्र उछालकर दूर फेंक देते हैं। उनके प्रति संवेदना कब उत्पन्न होगी? उनके प्रति कब करुणा के भाव जगेंगे? कब उनके अच्छे दिन आएँगे? और भी बहुत सी समस्याएँ हैं। बहुत सारी बातें हैं जिनके लिए अच्छे लोगों का मन करुणार्द्र हो जाना चाहिए।

हम बड़ी आसानी से कह देते हैं कि ये उनके कर्मों का फल है। जैसे कर्म किए थे भोगने पड़ेंगे। हमें तो भगवानों की सेवा और पूजा-पाठ से फुर्सत नहीं। वैसे हम बड़े लोगों के लिए इनका होना भी जरूरी है। यदि भिखारी,

गरीब अथवा पीड़ित नहीं होंगे तो हम किसके प्रति करुणार्द्र होंगे? हम किसे दान देंगे? हम कैसे उनकी मदद करते हुए वीडियो बनवाएँगे? करुणा क्या होती है इसे समझना है तो कैमरों की फौज के साथ दान करनेवालों की बजाय वास्तविक नायकों के जीवन को देखने का प्रयास करना अपेक्षित है। एक प्रेरक व अनुकरणीय व्यक्तित्व आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तेज बारिश हो रही थी। इस तेज बारिश में एक कुष्ट रोगी खुले में असहाय पड़ा हुआ बुरी तरह से कराह रहा था। उसकी मदद को कोई आगे नहीं आ रहा था। ऐसे में वहाँ से गुजरने वाला एक व्यक्ति इस कुष्ट रोगी की दयनीय दशा देखकर अन्दर तक हिल गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वो बस यही सोच रहा था कि इस कुष्ट रोगी की जगह अगर वो होता तो? इस घटना ने उसे इतना प्रभावित किया कि उसने उसी क्षण से जीवन भर कुष्ट रोगियों की सेवा करने का व्रत ले लिया। उसने उस कुष्ट रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने कुष्ट रोगियों की सेवा और चिकित्सा करने का व्रत तो ले लिया लेकिन वो खुद नहीं जानता था कि कुष्ट रोग कैसे होता है और इसका उपचार कैसे किया जाता है? उस दिन के बाद से वो कुष्ट रोग और उसके उपचार के अध्ययन में जुट गया। हमारे समाज में कुष्ट रोगियों को उपचार के दौरान अथवा बाद में भी आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता अतः उनका पुनर्वास भी जरूरी था अतः उसने महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले के घने जंगलों में आनन्दवन नामक एक आश्रम की स्थापना की ताकि कुष्ट रोगियों का उपचार ही नहीं उनका पुनर्वास भी किया जा सके।

वो चाहता था कि कुष्ट रोग का शीघ्र ही कोई अच्छा सा उपचार मिल जाए। इसके लिए वो लगातार प्रयोग करता रहता रहा। एक बार तो उसने कुष्ट रोग के बैक्टीरिया को चिकित्सीय प्रयोग के लिए स्वयं अपने शरीर में ही प्रविष्ट करा लिया ताकि कुष्ट रोग पर उचित शोध कार्य करके शीघ्र इसके उपचार में सफलता प्राप्त कर सके। कुष्ट रोगियों के इस हमदर्द व मानवता के महान् सेवक का नाम था मुरलीधर देवीदास आमटे। जिन्हें अधिकांश लोग बाबा आमटे के नाम से जानते हैं। गाँधीजी जिन्होंने स्वयं कुष्ट रोगियों के उपचार व पुनर्वास के लिए बहुत काम किया ने कुष्ट रोग के क्षेत्र में बाबा आमटे के अथक प्रयासों के लिए उन्हें अभय साधक कह कर पुकारा। उनका समस्त परिवार आज भी उनके इस महान् कार्य के लिए निस्स्वार्थ भाव से सेवा में रत है। सचमुच करुणा से ओतप्रोत व्यक्ति ही ऐसा कार्य कर सकता है।

बाबा आमटे का महत्त्व मात्र इसलिए नहीं है कि उन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास में लगा दिया अपितु इसलिए अधिक है कि इसके लिए वो अपने शरीर के साथ भयंकर प्रयोग करने व अपने प्राणों को संकट में डालने से भी नहीं हिचकिचाए। ऐसे बहुत से उदाहरण हमारे सामने हैं। सूची बहुत लंबी है लेकिन करुणा के बिना उदात्त भाव और महान् कार्य सम्भव ही नहीं। इसी भावना के अन्तर्गत लोग रक्तदान, दृष्टिदान अथवा देहदान करते हैं। करुणा मनुष्य को उदात्त बना देती है। निस्सन्देह हम सबमें अपने स्वजनों के प्रति करुणा की कमी नहीं लेकिन इसमें विस्तार अपेक्षित है। जब हम करुणा के संकुचित भाव या क्षेत्र से ऊपर उठ जाते हैं अथवा हमारी करुणा असीमित होकर विस्तार पा जाती है तभी हम सही अर्थों में मनुष्य बन पाते हैं।

- सीताराम गुप्ता
ए.डी. १०६ सी., पीतम पुरा, दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

क्या ईश्वर चोर है?

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

क्या ईश्वर चोर है? वेद पर आक्षेप करने वाले सुलेमान रिजवी का तो यही कहना है।

ऋग्वेद के प्रथम मंडल के १०३ सूक्त के छठे मन्त्र का ग्रिफिथ का भाष्य उन्होंने प्रस्तुत किया है जो यद्यपि मान्य नहीं कहा जा सकता।

Rig Veda 1.103.6 "...The Hero, watching like a thief in ambush, goes parting the possessions of the godless."
Tr. Ralph T.H. Griffith

आक्षेप का उत्तर

यहाँ ये महाशय वैदिक ईश्वर को चोर बता रहे हैं और उसके लिए ग्रिफिथ के द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं, जैसे ग्रिफिथ कोई वेदों का बहुत बड़ा विद्वान् हो। जिन विदेशी भाष्यकारों का उद्देश्य ही वेद को बदनाम करना हो, उसे प्रमाण रूप में प्रस्तुत करना दुर्भावना का ही परिचायक है। आप लोगों को अपने चौथे और सातवें आसमान पर रहने वाले ईश्वर की लीलाएँ तो दिखती नहीं, इधर आरोप लगाने चले। जहाँ तक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के अनुवाद का प्रश्न है, तो उन्होंने ईश्वर को नास्तिक और जनता के शोषक अर्थात् चोर, डाकू और ज्ञान के शत्रु से धन छीनकर ईमानदार लोगों को देने की बात कही है, उसको आपने चोरी कैसे बता दिया? मुस्लिम और ईसाई आक्रान्ता भारतवर्ष का धन लूटकर ले गये, क्या वह आपकी दृष्टि में अच्छा था? और दुष्ट से धन लेकर सज्जन को देना चोरी कैसे हो गया? ये संस्कार आपके हो सकते हैं, हमारे नहीं।

अब हम यहाँ ऋषि दयानन्द का भाष्य प्रस्तुत करते हैं–

भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम्।
य आदृत्या परिपन्थीव शूरोऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः॥

– ऋग्वेद १/१०३/६

पदार्थ– **(भूरिकर्मणे)** बहुकर्मकारिणे **(वृषभाय)** श्रेष्ठाय **(वृष्णे)** सुखप्रापकाय **(सत्यशुष्माय)** नित्यबलाय **(सुनवाम)** निष्पादयेम **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यसमूहम् **(यः)** **(आदृत्य)** आदरं कृत्वा **(परिपन्थीव)** यथा दस्युस्तथा चौराणां प्राणपदार्थहर्त्ता **(शूरः)** निर्भयः **(अयज्वनः)** यज्ञविरोधिनः **(विभजन्)** विभागं कुर्वन् **(एति)** प्राप्नोति **(वेदः)** धनम्।

भावार्थ– अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यो दस्युवत् प्रगल्भः साहसी सन् चौराणां सर्वस्वं हृत्वा सत्कर्मणामादरं विधाय पुरुषार्थी बलवानुत्तमो वर्त्तते, स एव सेनापतिः कार्य्यः।

पदार्थ– हम लोग **(यः)** जो **(शूरः)** निडर शूरवीर पुरुष **(आदृत्य)** आदर सत्कार कर **(परिपन्थीव)** जैसे सब प्रकार से मार्ग में चले हुए डाकू दूसरे का धन आदि सर्वस्व हर लेते हैं, वैसे चोरों के प्राण और उनके पदार्थों को छीन कर हरने वाला, **(विभजन्)** विभाग अर्थात् श्रेष्ठ और दुष्ट पुरुषों को अलग-अलग करता हुआ, उनमें से **(अयज्वनः)** जो यज्ञ नहीं करते उनके **(वेदः)** धन को **(एति)** छीन लेता, उस **(भूरिकर्मणे)** भारी काम के करने वाले **(वृषभाय)** श्रेष्ठ **(वृष्णे)** सुख पहुँचाने वाले **(सत्यशुष्माय)** नित्य बली सेनापति के लिये जैसे **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य समूह को **(सुनवाम)** उत्पन्न करें, वैसे तुम भी करो।

भावार्थ– इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जो ऐसा ढीठ है कि जैसे डाकू आदि होते है और साहस करता हुआ चोरों के धन आदि पदार्थों को हर, सज्जनों का आदर कर पुरुषार्थी बलवान् उत्तम से उत्तम हो, उसी को सेनापति करें।

हम यहाँ कहना चाहेंगे कि सर्वप्रथम तो आप यज्ञ शब्द का अर्थ समझ लेवें, जिसे हम पूर्व में समझा चुके हैं। यहाँ कहा गया है कि जैसे कोई चोर बलपूर्वक किसी पथिक का धन लूट लेता है, वैसे ही वीर पुरुष को चाहिए कि वह चोर-डाकूओं के धन को बलपूर्वक छीन लेवे और जो परोपकारी सज्जन लोग हैं, उनका आदर करे और ऐसा वीर पुरुष ही सेनापति होवे। वर्तमान में भी तो न्यायप्रिय शासक चोरों के द्वारा चोरी किये गये धन का हरण करके जिसका धन चोरी हुआ है, उसको देते ही हैं अथवा वह धन राजकोष में उपयोग होता है और ऐसा अवश्य ही होना चाहिए। जब तक चोरों के धन को छीना नहीं जाएगा, तब तक चोरी-डाके जैसे अपराध बन्द भी नहीं होंगे। यहाँ यज्ञकर्म न करने वाले एवं यज्ञविरोधी से धन छीनने की बात कही गयी है, वह उचित ही है, क्योंकि जो परोपकार नहीं करता अथवा राज्य को कर नहीं देता, वह चोर ही है, तब उसका धन राजा वा सेनापति छीन ले, तो यह उचित ही है, जिससे उस धन का राष्ट्रहित में उपयोग हो सके।

हाँ, कोई चोर व्यक्ति अवश्य ही वेद के इस आदेश का विरोध करेगा। अब आपको सोचना है कि आपको क्या करना चाहिए?

{आचार्य अग्निव्रत जी ने सुलेमान रिजवी के आक्षेप का अत्यन्त युक्तियुक्त समाधान किया है। उनका कुछ-कुछ यह मानना कि वेद में यज्ञ न करने वाले की सम्पत्ति लूट लेने का आदेश है, मात्र अज्ञान है। ऐसा वेदभाष्य की शैली से अपरिचय के कारण है। सेनापति कैसा हो- जो दुष्टों चोरों को दण्ड देने में समर्थ और सज्जनों का हित करने की भावना और क्षमता रखता हो, क्योंकि यही उसका पुनीत कर्तव्य है।

यहाँ यज्ञ का तात्पर्य परोपकार से है। प्रजा द्वारा अनेक प्रकार के 'करों' के अधीन राज्य को धन देना भी परोपकार ही है। क्योंकि अन्ततोगत्वा उसका उपयोग प्रजा की भलाई के लिए होता है। दूसरे यदि आप यह सोचते हैं कि परोपकार करना या न करना मनुष्य की इच्छा है उसे बाध्य नहीं किया जा सकता तो यह भी ठीक नहीं है। CSR क्या है? कम्पनियों को अपने लाभ में से Public welfare के लिए धन निकालना होता है। Tax laws क्या है? जो इस प्रकार का यज्ञ नहीं करता उसे शास्ति का सामना करना ही पड़ता है। आपको यह मन्त्र आपत्तिजनक लगता है तो सोचिये आज जो लोग काला धन रखते हैं उनसे वह धन छीन कर युक्तियुक्त उपयोग राज्य का धर्म नहीं है? यहाँ प्रत्येक विवेकी का उत्तर हाँ में ही होगा। इस कल्याणकारी निर्देश देने वाले मन्त्र की आलोचना अज्ञान अथवा द्वेष की परिचायक है। - सम्पादक}

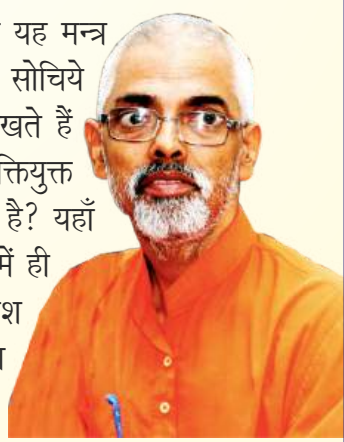

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल, चलभाष- ९४१४८३४४०३

‘अद्वितीय महापुरुष योगेश्वर कृष्ण जिनका जीवन अनुकरणीय है’

मनुष्य का जन्म आत्मा की उन्नति के लिये होता है। आत्मा की उन्नति में गौण रूप से शारीरिक उन्नति भी सम्मिलित है। यदि शरीर पुष्ट और बलवान न हो तो आत्मा की उन्नति नहीं हो सकती। आत्मा के अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार यह चार अवयव व उपकरण होते हैं। इनकी उन्नति भी आत्मा की उन्नति के लिये आवश्यक है। समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि वेदज्ञान से मनुष्य ईश्वर, आत्मा व सांसारिक ज्ञान को प्राप्त होकर तथा तदनुकूल आचरण करने से उसकी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है। श्रीकृष्ण जी सच्चे वेदानुयायी एवं ईश्वरभक्त थे। वह सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ नहीं थे अपितु माता-पिता से जन्म होने तथा शरीर छोड़ने के कारण वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार उनका श्रेष्ठ व ऋषियों के समान जीवात्मा होना ही निश्चित होता है। श्रीकृष्ण जी का जीवन संसार के सभी लोगों के लिये प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। उनके जीवन, कार्यों एवं शिक्षाओं का अध्ययन करने एवं उनके अनुरूप स्वयं को बनाने से मनुष्य जीवन सहित देश व समाज की रक्षा, उन्नति व उत्कर्ष हो सकता है। महाभारत के बाद श्रीकृष्ण जी से मिलते-जुलते गुणों वाले कुछ अन्य महापुरुष हुए हैं जिनमें हम आचार्य शंकर, आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द को सम्मिलित कर सकते हैं। यह तीनों महापुरुष भी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी तथा आदर्श देशभक्ति व उसके लिये बलिदान की भावना से सराबोर थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने अपने काल में अधर्म, अन्याय तथा अविद्या के विरुद्ध आन्दोलन किया था। आचार्य शंकर ने अपने समय में नास्तिकता को समाप्त करने सहित उसके प्रसार को रोककर वेद व वेदान्त की शिक्षाओं को कुछ वेद विपरीत मान्यताओं सहित स्थापित किया था। आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द जी ने भी अपने-अपने समय में देश व धर्म रक्षा के महत्वपूर्ण कार्यों को किया। वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा व इसका संवर्धन तभी हो सकता है कि जब हम इन सभी महापुरुषों सहित मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा अपने समस्त ऋषियों मुनियों व वेद एवं धर्म प्रेमी सत्पुरुषों की बतायी शिक्षाओं एवं सद्गुणों का अनुकरण करें। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमें वेदानुकूल मान्यताओं एवं शिक्षाओं से युक्त वैदिक ज्ञान को ही ग्रहण करना है और वेदविरुद्ध मान्यताओं का तिरस्कार करना है भले ही वह किसी महापुरुष या ऋषि तुल्य किसी व्यक्ति ने ही कही हों।

योगेश्वर कृष्ण जी का बड़ी विषम पारिवारिक एवं देश की राजनैतिक परिस्थितियों में जन्म हुआ था। उनके मामा कंस ने उनके माता-पिता देवकी और वसुदेव जी को अकारण ही जेल में डाल दिया था। आर्य विद्वान पं. चमूपति जी इस घटना को महाभारत के विपरीत पाते हैं और अनुमान करते हैं कि यह पुराणकालीन काल्पनिक घटना है। अपनी माता व पिता से उनका लालन व पालन भी न होकर मथुरा से ढाई मील दूर यमुना के दूसरी पार के गाँव गोकुल में भाई बलराम एवं बहिन सुभद्रा के साथ हुआ। उनकी शिक्षा वैदिक गुरुकुलीय पद्धति से हुई थी। निर्धन सुदामा आपके सहपाठी एवं मित्र थे। आपकी मित्रता भी इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। कृष्ण जी द्वारिका के राजा बने थे। उन्होंने अधर्मी राजाओं का विरोध किया था तथा अपने मामा कंस सहित अनेक दुष्ट अधर्मी राजाओं को अपने बुद्धिबल, शक्ति एवं नीतिमत्ता के आधार पर अपने मित्रों व सहयोगियों के द्वारा समाप्त किया। महाभारत से पूर्व आर्यावर्त्त राज्य के उत्तराधिकारी पाण्डव पुत्रों के राज्य में अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न की गईं। राज्य के लोभ से

छल पूर्वक पाण्डवों को द्यूत क्रीड़ा के लिये प्रेरित किया गया था और कौरव पक्ष के धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने उनके समस्त राज्य सहित युधिष्ठिर की पत्नी द्रोपदी पर भी अधिकार कर उसका भरी सभा में अपमान किया था। यदि कृष्ण जी द्यूत क्रीड़ा व द्रोपदी अपमान के अवसर पर आस-पास होते तो निश्चय ही वहाँ पहुँच कर इन कार्यों को कदापि न होने देते। बाद में पता चलने पर वह पाण्डवों से मिले और उन्हें धर्म पालन तथा राज्य की पुनः प्राप्ति के लिये धर्मपूर्वक प्रयत्न करने में सहयोग किया और प्रतिपक्ष द्वारा धर्म, कर्तव्य व उनके वचनों का पालन न करने पर महाभारत युद्ध की योजना भी पाण्डव पक्ष के साथ मिलकर तैयार की थी। इस युद्ध में अनेक राज्यों के राजाओं व उनकी सेनाओं ने भाग लिया था। दोनों ओर बड़े-बड़े वीर योद्धा थे। कृष्ण और पाँच पाण्डवों को छोड़कर अधिकांश योद्धा इस महायुद्ध में काल के गाल में समा गये थे। पाण्डव, उनके मित्र व अर्जुन के सारथी कृष्ण का पक्ष सत्य व धर्म पर आधारित था जिसकी अन्त में विजय हुई। पाण्डवों की इस विजय में श्रीकृष्ण जी का प्रमुख योगदान था। यदि वह न होते तो न युद्ध होता, न ही धर्म की जय होती। ऐसी स्थिति में इतिहास कुछ और होता जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अधर्म का विरोध और धर्म के पक्ष में सहयोग करने की शिक्षा हमें श्रीकृष्ण जी की महाभारत में भूमिका से मिलती है। हमें भी जीवन में अधर्म छोड़ कर धर्म पर ही अडिग व अकम्पायमान रहना चाहिये। ऐसा होने पर ही वर्तमान एवं भविष्य में वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

श्रीकृष्ण जी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी एवं ब्रह्मचर्य व्रत के आदर्श पालक थे। श्रीकृष्ण जी ने विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मणी जी से पूर्ण युवावस्था में विवाह किया था। विवाह के बाद दोनों पति-पत्नी में संवाद हुआ कि विवाह का अर्थ क्या है। विवाह सन्तान के लिये किया जाता है। इस पर सहमति होने पर श्रीकृष्ण जी ने रुक्मणी जी से पूछा कि तुम कैसी सन्तान चाहती हो? इसका उत्तर मिला कि श्रीकृष्ण जी जैसी सन्तान चाहिये। इस पर श्रीकृष्ण ने रुक्मणी जी को उनके साथ रहकर तपश्चर्या एवं ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा की जिस पर दोनों सहमत हुए। इसके बाद श्रीकृष्ण एवं माता रुक्मणी

जी ने उत्तराखण्ड के वनों व पर्वतों में १२ वर्ष रहकर ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत किया। अवधि पूरी होने पर उन्होंने प्रद्युम्न नाम के पुत्र को प्राप्त दिया। महाभारत में लिखा है कि जब प्रद्युम्न सायं अपने पिता कृष्ण जी के साथ अपने राजमहल में आते थे तो रुक्मणी जी कृष्ण व प्रद्युम्न दोनों की एक समान आकृति व गुणों की समानता को देखकर कौन उनका पति और कौन पुत्र है, इसे पहचानने में कठिनाई अनुभव करती थी। ब्रह्मचर्य की यह महिमा श्रीकृष्ण जी और माता रुक्मणी ने अपने जीवन में स्थापित की थी। यह ब्रह्मचर्य व्रत भी आर्यों व वैदिक धर्मियों के लिये शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह भी बता दें कि महाभारत युद्ध के समय कृष्ण व अर्जुन लगभग १२० वर्ष की आयु के थे। यह बात महाभारत में लिखी है। आज पूरे विश्व में इस आयु का व्यक्ति मिलना असम्भव है। यह वैदिक धर्म एवं संस्कृति की विशेषता है। इसे श्रीकृष्ण जी के जीवन की विशेषता भी कह सकते हैं। श्रीकृष्ण जी का यदि हम अनुकरण करेंगे तो हममें भी ब्रह्मचर्य के सेवन से दीर्घायु प्राप्त होने की सम्भावना बनती है।

कौरव सेना में प्रमुख योद्धाओं में भीष्म पितामह, राजा कर्ण, आचार्य द्रोणाचार्य और दुर्योधन आदि प्रमुख बलवान योद्धा थे। किसी शत्रु द्वारा इन पर विजय पाना कठिन व असम्भव-प्रायः था। यदि कृष्ण जी द्वारा राजनीति व युद्धनीति का आश्रय न लिया होता और उन्होंने महाभारत में जो भूमिका निभाई वह न निभाई होती और पाण्डवों को युद्ध में विजय मिलनी कठिन व असम्भव थी। अतः देश एवं धर्म की रक्षा के हित में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने पाण्डवों व अर्जुन को उचित व आवश्यक सुझाव दिये और उनसे इनका पालन कराया जिसका परिणाम था कि अविजेय योद्धा भीष्म, द्रोणाचार्य, दुर्योधन और कर्ण आदि पराजित किये जा सके। इस प्रकार से महाभारत युद्ध की विजय का अधिकांश श्रेय श्रीकृष्ण जी को जाता है। युद्ध में विजय प्राप्ति धर्म के साथ नीतिमत्ता का पालन करने से होती है। यह शिक्षा श्रीकृष्ण जी के जीवन से ज्ञात होती है।

महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद श्रीकृष्ण जी की

प्रेरणा से पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञ में श्री युधिष्ठिर जी को चक्रवर्ती सम्राट बनाया गया था। इस राजसूय यज्ञ में पूरे विश्व के राजा आये थे और उन्होंने महाराज युधिष्ठिर को वस्तुओं व स्वर्ण आदि के रूप में योग्य भेंटे दी थी व उन्हें अपना सम्राट स्वीकार किया था। इतिहास में ऐसा राजसूय यज्ञ इसके बाद पूरे विश्व में कहीं देखने को नहीं मिला। ईश्वर करे कि हमारा देश श्रीराम व श्रीकृष्ण सहित वेद, आचार्य चाणक्य तथा ऋषि दयानन्द जी की शिक्षाओं के आधार पर आगे बढ़े। इसी में वैदिक धर्म एवं देश का गौरव एवं रक्षा सम्भव है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में श्रीकृष्ण जी के गुणों व चरित्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। श्रीकृष्ण जी के महाभारत में उपलब्ध सत्य इतिहास पर आधारित अनेक आर्य विद्वानों के लिखे जीवन चरित्र मिलते हैं। जिनमें पं. चमूपित, डॉ. भवानीलाल भारतीय, लाला लालजपत राय आदि प्रमुख हैं। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित महाभारत एवं पं. सन्तराम जी द्वारा प्रणीत संक्षिप्त महाभारत भी अत्यन्त सराहनीय एवं पठनीय ग्रन्थ है। अन्य अनेक विद्वानों के ग्रन्थ भी पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। इससे सभी पाठकों को लाभ उठाना चाहिये।

- १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

राष्ट्रभाषा हिन्दी के संघर्ष भरे 75 वर्ष

–हिन्दी राष्ट्रीयता और अस्मिता की भाषा है–

हिन्दी राष्ट्रीय एकता का माध्यम है। देश के विभिन्न मत-मतान्तरों को छोड़ सभी राजनीतिज्ञों ने इसे स्वीकार किया है। हिन्दी के माध्यम से सारा देश जुड़ा है। हिन्दी सन्तों की, व्यवसाय की, ज्ञान-विज्ञान की भाषा रही है। हिन्दी देश के कण-कण और प्रत्येक अवयव में रची-बसी है। साहित्य संस्कृति के तथ्य को उजागर करने की भाषा रही है। हिन्दी जन आन्दोलन की भाषा रही है। हिन्दी ने देश को स्वतन्त्र कराया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव स्वतंत्रता के पूर्व ही प्राप्त हो गया था। महात्मा गाँधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता दी और सारे भारतवर्ष में इसके प्रचार और प्रसार का समर्थन किया। दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार इसी मन्तव्य को सफल बनाने के लिये किया गया। गाँधीजी की प्रेरणा से १९२० में हिन्दी प्रचार हेतु कई संस्थाएँ स्थापित हुईं। जिनकी शाखाएँ आज भी भारत में कार्यरत हैं और हिन्दी को लब्ध प्रतिष्ठित कराने व हिन्दी की महत्ता प्रतिपादित करने का प्रचार-प्रसार कर काले अंग्रेजों के मानस को मांजने का कार्य सम्पादित कर रही हैं।

ज्ञातव्य हो जब भाषा हृदय की अनुभूतियों और विवेकजन्य चिन्तन को आत्मसात करती है तभी वह वाणी वनकर अभिव्यक्त होती है। हिन्दी संस्कृत की देवनागरी लिपि को ही नहीं बल्कि आचरण और प्रकृति को भी अपने में समाहित करने में सक्षम रही है। प्रान्तीय भाषा-भाषियों ने हिन्दी भाषा को अपने व्यवहार और आचरण में शताब्दियों पहले से उतारना शुरू किया। इसलिए हिन्दी सर्वजन प्रिय भाषा बन गई। परिणामतः संविधान में हिन्दी को स्थान मिला तथा हिन्दी को हमारे संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के ३४३वें अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़ी सूझबूझ के साथ हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का निर्णय लिया है। वैसे हमारे देश में कई विकसित भाषाएँ हिन्दी से भी प्राचीन हैं और समृद्ध हैं। किन्तु वे अपने एक सीमित क्षेत्र में ही समझी और बोली जाती हैं।'

हिन्दी को राजभाषा का स्थान इसकी व्यापकता और सरलता के कारण ही दिया गया था। क्योंकि यही देश की ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकांश क्षेत्रों में अधिकतर लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है।

हिन्दी को जब यह स्थान दिया गया तब यह अपेक्षा की गई थी कि वह सारे देश को एकता सूत्र में बाँधने और शासन को जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में

सहायक होगी।

भारत बहुभाषी देश होने के साथ ही विभिन्न संस्कृतियों, रीति-रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं का देश है। इसलिए इस देश की केन्द्रीय भाषा में इस देश की मूलभूत विशेषताएँ भी प्रतिबिम्बित होना चाहिये। हमारे संविधान के अनुच्छेद ३५१ में इन बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी भाषा के विकास के लिए स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि- 'संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यहाँ यह स्पष्ट है कि इस भाषा के विकास के लिए भारतीय भाषाओं और संस्कृत से शब्द ग्रहण करने का अनुदेय है। किन्तु साथ ही हिन्दुस्तानी का भी उल्लेख है। यह भाषा सभी के मेल-जोल से विकसित हुई है। हिन्दी के विकास में आरम्भिक काल से ही हिन्दुओं के साथ-साथ मुसलमानों का भी उतना ही योगदान रहा है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और चिन्तक डॉ. रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार-

'हिन्दी साहित्य केवल हिन्दू कवियों का ही निर्माण नहीं है उसकी शक्ति और शोभा मुसलमानों ने भी बढ़ाई है। अमीर खुसरो, कबीर, जायसी, उसमान, रहीम और रसखान, अनीस एहमद और कमाल, ताज और तानसेन, नेवाज और फखरूद्दीन, आलम और शेख तथा मुबारक और रसलीन सब मुसलमान थे और उनमें से अधिकांश तो हिन्दी के अत्यन्त उच्चकोटि के कवि हुए हैं। हिन्दी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परम्परा नहीं, एकता, उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वातन्त्र्य की परम्परा है।'

मैं ऐसा मानता हूँ कि हिन्दी केवल साहित्य की अथवा राजकाज की भाषा नहीं है बल्कि हिन्दी राष्ट्रीयता और अस्मिता का प्रतीक है। इसका स्वरूप पिछले दिनों राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय साबित हो चुका है। जो हमारे लिए बड़े हर्ष की बात है। आज दुनिया के १०५ ऐसे देश हैं जहाँ किसी न किसी रूप में इसका व्यवहार होता है और विश्व के १६३ विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रूप में इसकी पढ़ाई होती है। भारत में इसके बोलने, समझने वालों की संख्या करीब ६० करोड़ से ज्यादा ही है कम नहीं। यह राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण बनाती है।

हमारा राष्ट्र गाँधी जी एवं शास्त्रीजी की १५४वीं

जयन्ती मना चुका है। वहीं १९९७ में आजादी की ५०वीं वर्षगांठ स्वर्ण जयन्ती के रूप में मना चुका है। और अब भारत हीरक जयन्ती वर्ष के साथ संविधान द्वारा हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा घोषित १४ सितम्बर १९४९ को करने के आधार पर यह वर्ष राजभाषा हिन्दी का हीरक जयन्ती वर्ष है। अतः ऐसे समय में अंग्रेजी को बिलकुल विदा कर भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान देते हुए हिन्दी को पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित करना हमारा, हमारी सरकार का, राष्ट्रवासियों का कर्त्तव्य और दायित्व बनता है।

यह प्रश्न इसलिए कि उसी अनुच्छेद में आगे लिखा हुआ है कि सन् १९६५ के बाद भी अंग्रेजी को चालू रखने के लिए संसद कानून बना सकती है। १४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभा ने हिन्दी को

भारत की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया। २६ जनवरी १९५० से संविधान के तहत इसे लागू भी कर दिया गया। इसके पहले जब १९ अप्रैल १९४७ को बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने कहा था कि हिन्दुस्तानी को न केवल संघ की वरन् सभी इकाइयों की भाषा बना दिया जाना चाहिये। उनका कहना था- 'यथास्थिति' धारा९ हिन्दुस्तानी को संघ की राजभाषा घोषित करती है। समिति द्वारा गृहीत शब्दावली के विचार से यह स्पष्ट है कि हिन्दुस्तानी राज्य की अर्थात् संघ की भाषा होगी और साथ ही इकाइयों की भी। यदि प्रत्येक इकाई को स्वतंत्रता दी जाती है, जैसी कि अन्य धारा में दी गई है कि वह किसी भी भाषा को राजभाषा बनाए तो इससे न केवल भारत के लिये एक राष्ट्रभाषा का उद्देश्य पराभूत हो जायेगा वरन् भाषाई विभेदता के कारण भारत का प्रशासन भी असम्भव हो जायेगा। अतः मेरा अभिमत है कि 'संघ' के स्थान पर 'राज्य' शब्द रख दिया जाए। हो सकता है इकाइयाँ हिन्दुस्तानी को अपनी राजभाषा बनाने के लिए समय माँगे। इसके लिए उन्हें समय देने में कोई हानि नहीं है। किन्तु इस विषय पर कोई सन्देह नहीं हो सकता है कि प्रारम्भ से ही इकाइयों पर हिन्दुस्तानी को ग्रहण करने की वैधानिक अनिवार्यता या बाध्यता होगी।

सन् १९३१ की जनगणना के अनुसार देश की आबादी का ६५ प्रतिशत भाग हिन्दी बोलता व समझता था इसलिए गाँधी जी का जोर था कि हिन्दी और उर्दू के मेल से पनपी हिन्दुस्तानी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो तथा आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी होगी। १९३६ में कांग्रेस ने गाँधीजी की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पारित किया था कि कांग्रेस के अधिवेशन की कार्यवाही हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी में ही सम्पन्न हो। निश्चित ही आजादी के पूर्व राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार-प्रसार राष्ट्रीयता का द्योतक था। उस समय कल्पना भी नहीं की थी कि अंग्रेज चले जायेंगे और अंग्रेजी रह जायेगी।

दुर्भाग्य भारत का, हिन्दी का राजनीतिक उठापटक वामपन्थी तथा आजादी के बाद ५ केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद, हुमायूँ कबीर, मो. करीम चागला, फकरुद्दीन अली अहमद व नजुल हसन रहे। जिन्होंने हिन्दी के प्रति उदासीनता का ही रुख रखा था। इन्होने बाबर, हुमायूँ, जहाँगीर, औरंगजेब याने इस्लाम सम्बन्धी पाठ्यक्रम ही परोसा। जिसके कारण हिन्दी की उन्नति की जगह अवनति ही हुई है। १९६३ में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ लेकिन १३ वर्षों में एक नियम नहीं बना सके। यह हास्यास्पद से अधिक एक दुःखद और दुःखद से बढ़कर शर्मनाक बात है कि राजभाषा हिन्दी के प्रति आपने कभी न तो मुस्तैदी बरती और न ही ईमानदारी। १९७६ में राजभाषा नियम बने। इस भाँति राजसिंहासन पर बैठने का जिस भाषा को १९४९-५० में संवैधानिक अधिकार मिला वह फुटपाथ पर खड़ी रही और आज वर्तमान में हमसे हिन्दी कुछ प्रश्न पूछ रही है कि क्यों केन्द्र सरकार व राज्य सरकार में ६० से ८० प्रतिशत कार्य अंग्रेजी में होते हैं?

आज केन्द्र व राज्य सरकारों में शायद ही कोई ऐसा पद हो जिसमें बिना अंग्रेजी जाने किसी को सेवा का अवसर मिला हो। यह राजभाषा अधिनियम १९६३ का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है। वहीं दूसरी ओर धारा ३(३) जिसके अन्तर्गत हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का ज्ञान आवश्यक है उसकी भी ऐसी की तैसी हो रही है। वर्तमान में मोदी सरकार के चलते राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थिति सुधरी है। जनमानस को भी हिन्दी के प्रति लगाव व प्रयोग हेतु अपनी सन्तानों को भी कान्वेन्टिया रोग से बचाना होगा। तब कहीं जाकर हिन्दी की स्थिति सुदृढ़ होगी।

अन्त में विस्तार भय को देखते हुए लेखनी को समापन की ओर मोड़ते हुए इतना ही निवेदन करूँगा

कि आपके मन में कोई झंझावात हिन्दी को लेकर पैदा हुआ हो तो मेरी लेखनी धन्य हो जाएगी अन्यथा मन में वेदना होगी कि काले अंग्रेजों के हृदय चेतना शून्य हो गये हैं। शिक्षा, संस्कृति और संस्कार तीनों को हमने कहीं गिरवी रख दिया है तथा अंग्रेजी के व्यामोह में इस देश की अस्मिता से सौदा हो गया हो। यह रूप देखकर शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी के बजाए अंग्रेजी स्कूलों की आई बाढ़ आगे क्या परिचय देगी? इस पर हम चिन्तन करें। यही विनय।

जय हिन्दी-जय नागरी।

डॉ. पं. लक्ष्मीनाराण 'सत्यार्थी'
५/५, हिन्दी विद्या सदन
दयानन्द कॉलोनी, नागदा जंक्शन
जिला- उज्जैन (म. प्र.), चलभाष- ९९२६७३७६०५

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रूपये 264/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

आर्य समाज व न्यास की अपूरणीय क्षति

दिनांक ६ अगस्त २०२४ को आर्य समाज के पुरोहित श्री अनन्तदेव जी शर्मा के निधन के समाचार ने हम सबको स्तब्ध कर दिया।

आदरणीय अनन्तदेव जी हमेशा न्यास एवं आर्य समाज के कार्यों के लिए समर्पित रहते थे। उनके इस प्रकार चले जाने से न्यास को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण आर्य समाज को गहरी क्षति हुई है।

आदरणीय अनन्तदेव जी ने पुरोहित के रूप में अपने कर्तव्य का सम्पादन जिस निष्ठा एवं जिस गरिमा के साथ किया वैसे उदाहरण आर्य समाज में बहुत कम देखने को मिलते हैं। अपने वाहन पर यज्ञ से सम्बन्धित समस्त सामग्री को स्वयं ले जाकर घर-घर में यज्ञ की ज्योति आपने जलायी तथा उन परिवारों को आर्य समाज से जोड़ने का भरसक प्रयास किया वह अद्भुत था और संख्या की दृष्टि से सोचने लगें तो यह लगता है कि उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किया हो। यज्ञ में उनकी गहरी आस्था थी। एक याज्ञिक के रूप में उन्होंने जीवन को जिया तो निश्चित ही उसका सुफल परमपिता परमात्मा की व्यवस्था में उनको मिलेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

इस दुःख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण सहभागी हैं। हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर

भीतर की चाँदनी

तमिलनाडु की यात्रा में, मैं एक परिवार में ठहरा हुआ था। वहाँ घर के बाहर एक पिंजरे में एक प्यारा-सा पक्षी था। मैंने देखा कि वह पिंजरा लोहे की सलाखों का न था, अपितु उसके चारों ओर काँच की दीवारें थीं। मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने सोचा ऐसा कौन-सा कारण है जिसके चलते पिंजरा लोहे की सींखचों का न होकर काँच की दीवारों से घिरा हुआ है। पक्षी पिंजरे में कैद, पर पारदर्शी आवरण में उसे बाहर का सारा दृश्य दिखाई दे रहा है। शुरू-शुरू में तो पक्षी ने काँच पर चोंच से चोट भी मारी होगी, पंख भी फड़फड़ाए होंगे, बाहर निकलने की कोशिश भी की होगी, पर धीरे-धीरे उसने जाना होगा कि मेरा आकाश बस इतना ही है। चोंच से चोट भी बन्द कर दी, पंख भी समेट लिए, उड़ने की चेष्टा भी रोक दी और उसी काँच के पिंजरे में वह पक्षी आराम से जीने लगा। धीरे-धीरे तो उसे पंखों के उपयोग का भी ज्ञान न रहा। उसे लगा उसका सुख इसी पिंजरे के संसार में है। वह बाहर का विश्व देख रहा था, फिर भी उसे लगा उसका सम्पूर्ण अस्तित्व इसी पिंजरे में है।

मनुष्य की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। एक पारदर्शी काँच में मनुष्य जकड़ गया है। जहाँ से वह बाहर के अस्तित्व को देख तो रहा है लेकिन इस पारदर्शी पिंजरे से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। मनुष्य अपने ही मनोविकल्प में इतना जकड़ गया है, इस कदर कैद हो गया है कि मुक्त होना और मुक्ति का रसास्वाद करना उसके लिए दुर्लभ बन गया है। यही कारण है कि आज हर व्यक्ति चाहे वह पढ़ा-लिखा है या अनपढ़, एक विशेष प्रकार के तनाव में जी रहा है। ऊहापोह भरे विचारों में विचरते हुए अव्यक्त तनाव से घिरा हुआ है।

माना कि विचार करना मनुष्य के लिए आवश्यक है तब इस सत्य को स्वीकार कर लेना चाहिए कि निर्विचार होना भी मनुष्य के लिए आवश्यक है। वह जीवन भर, वर्ष, माह, दिन, हर घड़ी विचार-प्रवाह में ही बहता रहा तो निश्चित ही पागल हो जाएगा। लेकिन प्रकृति ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि आपको विश्राम करना ही होता है। सारी रात आप मीठी नींद में गुजार देते हैं, तब कोई विचार नहीं होते फिर सुबह आप तरोताजा उठते हैं। तीन दिन, केवल तीन दिन आप चौबीस घंटे में झपकी भी मत लीजिए, फिर देखिए आपकी क्या दशा होती है। आप चिड़चिड़े हो जाएँगे, अनावश्यक क्रोध घेरेगा, आलस्य चढ़ेगा, झुंझलाहट होगी, और यह सब न सोने का परिणाम है। अनिद्रा के रोगी को देखा है? हर समय विकल्पों की

शृंखला आपको बेचैन कर देगी, अधिक समय तक आपको सामान्य न रहने देगी। आप उचटे से हो जाएँगे।

व्यक्ति पागल क्यों होता है? विचारों का आधिक्य उसे अपने आप में नहीं रहने देता। अपनी क्षमता से अधिक वह विचार करने लगता है। मस्तिष्क के कोषों की जितनी विचार करने की क्षमता थी उससे अधिक जब वह विचार करने लगा और वे कोष क्षीण होने लगे तो अन्ततः पागलपन/उचाटपन उतरने लगा। नब्बे फीसदी लोग चौबीस घंटे व्यक्त-अव्यक्त विचारों में खोये रहते हैं। उनके मस्तिष्क में उथल-पुथल मची रहती है। यह नहीं कि वे कोई सार्थक चिन्तन कर रहे हैं बल्कि उनका सिर ऐसा कूड़ादान बन गया है जिसमें अनर्गल विचारों का आलोड़न होता रहता है। परिणाम यह होता है कि उनके दिमाग में विधायक विचार आ नहीं पाता। उनकी विचार करने की क्षमता क्षीण हो जाती है ।

माना कि सत्य के अनुचिन्तन के लिए विचार आवश्यक है लेकिन ध्यान रहे सत्य की उपलब्धि के लिए निर्विचार होना उससे भी अधिक आवश्यक है। आप भवन में आने के लिए सीढ़ियों का उपयोग कर रहे हैं, ठीक है लेकिन भवन में प्रवेश करने के लिए सीढ़ियों को छोड़ना भी आवश्यक है। अगर हम यह सोचें कि जिन सीढ़ियों ने मुझे मन्दिर तक पहुँचाया है उन्हें कैसे छोड़ें तो मूर्ति के दर्शन कैसे कर सकोगे? जिस स्कूटर ने तुम्हें दुकान से घर तक पहुँचाया और तुम उसे न छोड़ो, उसका आभार ही मानते रहो तो घर के अन्दर नहीं पहुँच पाओगे। माना कि नदी को पार करने के लिए नौका की आवश्यकता है लेकिन तट पर पहुँचकर नौका को छोड़ना भी आवश्यक है तभी तो किनारे लग सकोगे। मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि ध्यान में गहराई के लिए विचार और वह मन जिससे विचार उठ रहे हैं, उसे मौन हो जाने दें। मुक्ति के लिए मनोमौन जरूरी है ।

अगर दिन में आठ घण्टे विचारों से घिरे रहते हो तो अस्सी मिनट निर्विचार हो रहो। यह भी न हो सके तो आठ मिनट से शुरू करो। तुम देखोगे निरन्तर चलते विचार जो आनन्द न दे सके, शान्त होकर बैठने पर अनुपम आनन्द का अनुभव होने लगेगा। अगर कोई चौबीस घंटे सोया रहे तो नींद का आनन्द ले पाएगा? कोई आराम अनुभव करेगा? अगर नींद का, शारीरिक आराम का सुख पाना है तो जरूरी है तुम जगो। सुस्ती को तोड़ो भी, स्फूर्ति में आओ भी।

दो तरह के मनुष्य हैं, एक विचार करने वाला और दूसरा विश्वास करने वाला। लेकिन जिसने सिर्फ विचार किया वह भी कुछ न पा सका और जिसने बगैर जाने विचारे विश्वास किया वह भी अधूरा ही रहा। बिना विचारे अगर तुम विश्वास में जीने लग गए तो तुम्हारा जीवन अंध-विश्वास का अनुगामी हो जाएगा। और जो सिर्फ विचारों में जीते हैं वे विचारों का आविष्कार तो कर लेते हैं पर जीवन के आविष्कार से वंचित रह जाते हैं। जीवन सुख-शान्ति-संतोष से खाली हो जाता है। आप जानते हैं अमेरिका में सबसे ज्यादा मनोचिकित्सक पाए जाते हैं, क्यों? क्योंकि वहाँ का मनुष्य सबसे अधिक विचार करता है। दिन-रात, सोते-जागते, उठते-बैठते एक ही प्रक्रिया चल रही है विचारों की। परिणामतः उसकी नींद हराम हो गई। अनुसंधानों से पता चला है कि न्यूयार्क की तीस फीसदी जनता बिना नींद की गोली लिए सो नहीं पाती। एक समय ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि सौ फीसदी लोगों को नींद की गोली लेनी पड़े क्योंकि विचारों का अन्तर्द्वंद्व तेजी से बढ़ रहा है। स्वयं को निर्विचार करने की, शान्त रहने की क्षमता उनके हाथ से निकल गई है। ध्यान निर्विचार होने का, शान्त मनस् होने का उपक्रम है।

मनुष्य का मस्तिष्क विचारों से बोझिल होता जा रहा है, विश्वास के द्वारा अन्धविश्वास में जकड़ रहा है। परिणामस्वरूप नब्बे प्रतिशत लोग तनाव में जी रहे हैं। भीतर-ही-भीतर अशान्त वातावरण के साथ जी रहे हैं। मेरा तो मत है कि हमारी आज की शिक्षा पद्धति को बदला जाना चाहिए। उसमें ध्यान का

समावेश होना चाहिए ताकि व्यक्ति जो विचार उपार्जित करे उनसे मुक्त होने का उपाय भी सीख सके । तुम जहाँ हो वहीं पूरी तरह हो सको यह कला जान सको। नहीं तो तुम डॉक्टर बन गए और जब रसोई में गए तो मरीजों का ख्याल लेकर जाओगे, भोजन में पूरा रस न ले पाओगे और जब क्लीनिक गए तो भोजन के स्वाद के बारे में विचार करोगे, ऐसे में मरीज का क्या हाल होगा भगवान जाने। तुम एक व्यापारी हो और दुकान में बैठे-बैठे अपनी पत्नी, स्नेही, परिवार या बच्चों के बारे में खयालों से उलझे रहे हो तो वह विचारों की निरर्थक उठापटक के अलावा क्या है? हम अपने ढ़ाई किलो के सिर में टनों विचार का बोझा उठाए फिरते हैं। सिर में एक कोहराम मचा हुआ है। जिसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। ध्यान वास्तव में तुम्हें निर्विचार करने की प्रक्रिया है ।

तुम जिस कार्य में प्रवृत्त हो अपने पूरे अस्तित्व के साथ उसमें प्रवृत्त रहो, तो तुम्हारे दिमाग का कूड़ा-कर्कट अपने आप बाहर निकल जाएगा या कचरा जमा ही न होने पाएगा। अन्यथा करोगे तुम सामायिक लेकिन उसमें भी तुम दूधवाले और शाकभाजी वाले की फिराक में रहोगे। माला तो गिनते रहोगे लेकिन बहू का खयाल विस्मृत न कर पाओगे। मन्दिर में मूर्ति का दर्शन करते हुए भी नोटों के बंडल ही दिखाई देंगे। क्योंकि तुम्हारे दिमाग में सतत् यही चल रहा है। सोचो क्या हर समय मस्तिष्क को इस प्रकार भारभूत बनाए रखना है? यह हो क्या रहा है? परमात्मा ने तुम्हें जीवन दिया फिर भी तुम खुशी और आनन्द से नहीं जी पाते। उसने सारी सुख सुविधाएँ दीं, विज्ञान ने भौतिक साधन उपलब्ध कराए फिर भी सुख और आनन्द कहीं खो गया है। यहाँ जो भी आता है कोई-न-कोई शिकवा-शिकायत लेकर आता है। कुछ-न-कुछ जिन्दगी में दुःख का कारण बना हुआ है सुख छिनता चला जा रहा है। अपने जीवन को जितने आनन्द, उत्सव और धन्यता के साथ जी सको, जीने की कोशिश करो। तनाव, भारीपन, अवसाद के साथ अगर सौ वर्ष भी जी लिए तो सारी जिन्दगी बेकार जीए। प्रसन्नता, उत्सव, उल्लास के साथ अगर एक वर्ष भी तुम जी चुके हो तो वह जीवन को जीने की संज्ञा दे जाएगा।

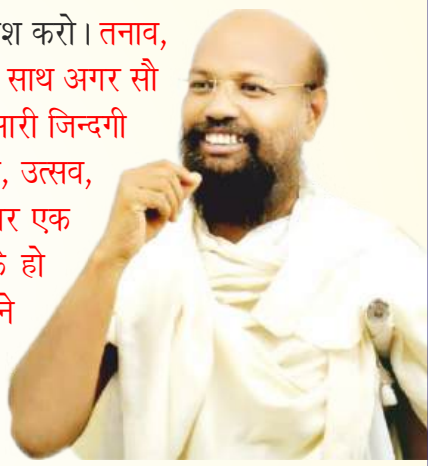

लेखक- महोपाध्याय ललितप्रभ सागर जी
साभार- ध्यान योग विधि और वचन

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

१००० प्रतियों के प्रकाशन हेतु २५००० रुपये का दान देने का श्रम करें। १० प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी। आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक **310102010041518, IFSC-UBIN 0531014** में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य
अध्यक्ष-न्यास

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

डॉ. अमृत लाल तापड़िया
संयुक्तमंत्री-न्यास

वर्षा ऋतु में होने वाली व्याधियों की सामान्य चिकित्सा

अतिसार- दूषित आहार, मिथ्या आहार, दूषित जलपान, विषाक्त भोजन, विष भक्षण, मद्यपान, शोक, उदरकृमि, वेग निरोध आदि कारणों से उदरस्थ जलीय धातु बढ़कर जठराग्नि को मन्द कर देती है और जलीय धातु वायु के द्वारा नीचे जाकर मल में मिल जाती है, जिससे जलियांश की अधिकता लिए मल बार-बार गुदामार्ग से बाहर निकलता है। इस रोग को आधुनिक चिकित्सक डायरिया (Diarrhoea) कहते हैं। वर्षा ऋतु में जल दूषित होने, पाचकाग्नि मन्द होने व मक्खी, मच्छर आदि जन्तुओं द्वारा जल, भोजनादि द्रव्यों के दूषित होने के कारण अतिसार होने की सम्भावना अधिक रहती है।

चिकित्सा

सर्वप्रथम आमातिसार और पक्वातिसार का परीक्षण करें। आमातिसार में पेट में भारीपन रहता है, अजीर्ण होता है, गैस के कारण पेट फूला हुआ रहता है। इस अवस्था में कभी भी तुरन्त दस्त बन्द करने की औषधि नहीं देनी चाहिए। आमातिसार में अगर दोष मृदु हों, रोग का आक्रमण हल्का हो तो दूषित पदार्थों के निकल जाने के पश्चात् अतिसार स्वतः शान्त हो जाता है। ऐसी दशा में किसी विशेष चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल दीपन, पाचन योग जैसे हिंग्वष्टक चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण छाछ के साथ देने से ही आराम हो जाता है।

अगर रोगी दुर्बल हो और अधिक दस्तों के कारण शरीर में जलियांश की कमी हो गई हो तो तुरन्त दस्तों को बन्द करने की दवा देनी चाहिए व शरीर में जलापूर्ति करने का उपक्रम करें अन्यथा रोगी के प्राण संकट में पड़ जाते हैं। शरीर में जलापूर्ति हेतु एक लीटर साफ एवं जीवाणु रहित पानी में ३० ग्राम चीनी, ३ ग्राम नमक, ३ ग्राम खाने का मीठा सोडा तथा ४ चम्मच नींबू का इस मिलाकर पेय तैय्यार करें। इसे २०-२० मिलीलीटर की मात्रा में ५-१० मिनट के अन्तराल से बार-बार देते रहें। यदि अत्यधिक मात्रा में शरीर का जल निकल गया हो तो, तुरन्त शिरामार्ग से सेलाइन जल चढ़ाना चाहिए जिससे रोगी के प्राण बच सकें।

आमातिसार में रोगी को शुरू के २४ घण्टों में कुछ भी खाने को नहीं देना चाहिए ताकि दोष पच जायें। लेकिन उपरोक्त जलाभावनाशक पेय थोड़ी-थोड़ी मात्रा में देते रहना चाहिए।

पक्वातिसार में जब रोगी के दोष पच गये हों, पेट हल्का हो गया हो फिर भी बार-बार पतले दस्त लग रहे हों तो उन्हें तुरन्त बन्द करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए 'कपूर रस' की १-१ गोली अर्क सौंफ के साथ ६-६ घण्टों के अन्तराल से देने से दस्तों की अधिकता, पेट दर्द, ऐंठन आदि विकार शांत हो जाते हैं। इसके बाद भी अगर दस्तों में आराम नहीं हो तो योग्य चिकित्सक की सलाह लेवें।

प्रवाहिका

जिस व्याधि में पेट में मरोड़ होकर गुदामार्ग से कफ एवं रक्त मिश्रित मल बार-बार प्रवाहित होता है उसे आयुर्वेद में प्रवाहिका कहते हैं। आधुनिक विज्ञान में इसे डिसेन्ट्री नाम से जाना जाता है। यह बड़ी आंत का रोग है जिसमें दुष्पाच्य एवं संक्रमित आहार सेवन से बृहदान्त्र की श्लेष्मिक कला में शोथ होकर व्रण हो जाते हैं और बार-बार मरोड़ के साथ मलप्रवृत्ति होती है। इसमें पक्वातिसार के समान दस्त रोकने वाली चिकित्सा से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

इसमें सामान्यतः निम्न औषधियों से आराम हो जाता है।-

१. ईसबगोल की भूसी २ चम्मच, लवण भास्कर चूर्ण २ चम्मच मिलाकर दिन में ३-४ बार दही के साथ देने से अच्छा लाभ हो जाता है।

२. कुटजारिष्ट तथा सौंफ अर्क ४-४ चम्मच बराबर जल मिलाकर भोजन के बाद देने से प्रवाहिका ठीक हो जाती है।

३. सौंठ, सौंफ और बेलगिरी प्रत्येक ७-७ ग्राम और खांड १० ग्राम। इन सबको कूट छानकर खांड मिलाकर रख लें। प्रथम दिन ७ ग्राम, दूसरे दिन १० ग्राम तथा तीसरे दिन १४ ग्राम जल के साथ दें। प्रवाहिका में अच्छा लाभ होता है।

मलेरिया

१. महासुदर्शन चूर्ण १-१ चम्मच सुबह-शाम जल के साथ लेते रहने से मलेरिया ज्वर नहीं होता है।

२. ज्वर आने पर गिलोय, तुलसी के पत्ते, अदरक व काली मिर्च का काढ़ा अच्छा लाभ करता है।

३. कुछ मनुष्यों को मलेरिया ज्वर का पुनः-पुनः आक्रमण होता रहता है। दवा कराने पर ठीक होता है लेकिन १५-२० दिन में पुनः मलेरिया हो जाता है। ऐसे लोगों को निम्नलिखित दवा १ माह देने के पश्चात् कभी मलेरिया ज्वर नही आता।

१. महासुदर्शन घनवटी ३ गोली
संजीवनी वटी ३ गोली
गोदन्ती भस्म ५०० मि.ग्रा.
गिलोय सत्व १ ग्राम
ऐसी १-१ मात्रा प्रातः-सायं उष्ण जल से देवें।

२. आरोग्यवर्धिनी २ गोली
अमृतारिष्ट २० मिली लिटर
भोजनोपरान्त जल से सुबह-शाम देवें।

खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी-

वर्षा ऋतु में फंगल इन्फेक्शन होकर चर्म रोग होने की ज्यादा सम्भावना होती है। इसके लिए नीम के पत्ते पानी में उबालकर उस पानी से स्नान करना चाहिए व भोजनोपरान्त खदिरारिष्ट २०-२० मि.ली. बराबर मात्रा में पानी मिलाकर पीना चाहिए। इससे खुजली, फोड़े, फुन्सी, मुंहासों में अच्छा लाभ होता है। इसके अतिरिक्त हल्का सुपाच्य कम मिर्च-मसालों वाला भोजन करें। नमक, मिर्च, तैल, खटाई का परहेज करें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६, हिरणमगरी, उदयपुर

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज नवलखा महल सांस्कृति केन्द्र, उदयपुर को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महान् व्यक्तित्व ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी। इस केन्द्र पर भारतीय संस्कृति के मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन का प्रयास किया जा रहा है। जो वर्तमान समय में हमारे बालक-बालिकाओं एवं युवाओं के पथ-प्रदर्शन में अति आवश्यक है। यह सांस्कृतिक केन्द्र अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक है। यहाँ की सारी व्यवस्थाएँ अत्यन्त सुव्यवस्थित हैं। स्कूली विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के लिए अच्छा स्थान है। शुभकामनाओं सहित। - महेन्द्र कुमार जैन; संयुक्त निदेशक, उदयपुर संभाग, उदयपुर

We learnt about 16 sanskar of our Indian system and we saw our mewar freedom fighters short movie, how to they won n all struggle about. We saw maharshi dayanand saraswati life story....and learnt many Vedic culture n all and some ramayan, Mahabharata facts.. thanks for navlakha Mahal and all staff for so much to tell and so much information to give. I humbly request to everyone must visit such a beautiful, informative place. great experience. Special thank you to Mr. Vishal and Miss Karishma who explained every things in brief and both are very cool nature and good behavior and both are very trend and good knowledge about all things which are in museum. I like this museum and I will visit once again. **- Priyansh Salvi; Udaipur**

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

महर्षि दयानन्द के जीवन में ऐसे प्रसंग सैंकड़ों की संख्या में उपलब्ध हैं जब सत्य बोलने के कारण नादान लोगों ने, उन लोगों ने जिनके रोग की वो दवा लेकर आये थे, उन्हीं ने उस वैद्यराज की कीमत को नहीं समझा और जी भरकर उनका अपमान किया, गालियाँ दीं, पत्थर फेंके यहाँ तक कि उनके प्राणान्त करने के प्रयास किये। कवि ने सही लिखा है-

गिराए ईंट और पत्थर उन्हीं नादान लोगों ने।
कि वे जिनके लिए अमृत का प्याला लेके आये थे।।

कानपुर की बात है। गंगा किनारे जो लोग श्रद्धालुओं से भिक्षा प्राप्त करते थे उन्हें गंगापुत्र कहते थे। इनमें से एक गंगापुत्र स्वामी जी से बहुत चिढ़ने लगा। वह महाराज के डेरे पर आकर रोजाना गालियाँ देता था। श्री महाराज ने इस पर कभी ध्यान ही नहीं दिया। एक बार वह गंगापुत्र कई दिनों से नहीं आया। स्वामी जी ने उसे बुलवाया और जो मिष्ठान्न और भोज्य पदार्थ भक्तगण उनके लिए लाते थे उसमें से उस गंगापुत्र को भी दिया और उसको रोज आने को कहा। वह गंगापुत्र प्रतिदिन आता और स्वामी जी उसको मिष्ठान्न फल आदि दे देते। एक दिन उसकी आत्मा ने उसको धिक्कारा कि ऐसे दयालु प्रकृति के महात्मा के प्रति उसका व्यवहार पाप नहीं तो और क्या है? वह स्वामी जी के चरणों में गिर पडा, और अपने अपराध के लिए क्षमा माँगने लगा। स्वामी जी ने उसको सान्त्वना दी, और क्षमा कर दिया। यही था स्वामीजी का वास्तविक और स्वाभाविक चरित्र, जिसके दर्शन हमें उनके जीवन में सर्वत्र होते हैं। यहाँ से स्वामीजी काशी की ओर चले और प्रथम रामनगर में डेरा डाला।

स्वामी जी जब काशी पहुँचे तो काशी नरेश को भी उनके आने की जानकारी मिली। काशी नरेश महाराजा

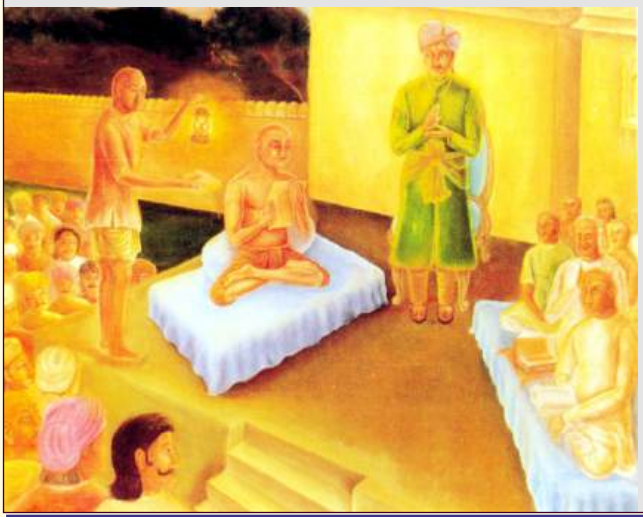

ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह सन्त समाज की बड़ी इज्जत करते थे। उन्होंने श्री महाराज के लिए भी आठ आने प्रतिदिन नियत कर दिया। धीरे-धीरे उन्हें स्वामी दयानन्द के द्वारा मूर्तिपूजा के खंडन करने के समाचार भी मिले। वे पक्के मूर्तिपूजक थे, अतः ये समाचार उन्हें अप्रिय लगे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि स्वामी जी मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें। महाराजा ने स्वामी जी को प्रस्ताव भिजवाया कि 'वे मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें तो १०० रुपये प्रतिमाह उनको राज्य की ओर से दिए

जाते रहेंगे।' उस समय यह १०० रुपये की राशि कितनी बड़ी होगी यह पाठक आसानी से समझ सकते हैं। परन्तु सत्याग्रही दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'महाराजा सम्पूर्ण राज्य की सम्पत्ति भी भले ही दें वे मूर्तिपूजा का खण्डन नहीं छोड़ेंगे।' महाराजा इस उत्तर को पचा नहीं पाए। यद्यपि वे चाहते थे कि जब तक दयानन्द उनके राज्य में हैं उनके साथ कुछ अप्रिय नहीं घटना चाहिए। इसलिए उन्होंने काशी के पण्डितों को यही कहा कि वे दयानन्द से मूर्तिपूजा के ऊपर शास्त्रार्थ करें और दयानन्द को पराजित करें। काशी की पण्डित मण्डली तब तक स्वामीजी की विद्वता जान चुकी थी। वे सारे पण्डित वेदज्ञ भी नहीं थे अतः स्वामी जी से शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते थे परन्तु काशी नरेश की इच्छा के कारण उन्हें विवश होना पड़ा।

स्वामी जी रामनगर से चलकर २३ अक्टूबर १८६९ को काशी में पधारकर आनन्द बाग में ठहरे। काशी मूर्तिपूजकों का गढ़ है, आज दयानन्द अपने विद्याबल और तर्कबल के सहारे काशी को विजित करने चले हैं। काशी के पण्डित सहस्रों में हैं उन्हें काशी का जन-बल तथा राज्य का धनबल प्राप्त है परन्तु दयानन्द एकाकी हैं केवल ईश्वर उनका अवलम्ब है, पर दयानन्द के चहरे पर वही सरल मुस्कान है चिन्ता की एक लकीर भी वहाँ देखी नहीं जा सकती। ईश्वर व सत्य को पूर्णतः समर्पित महात्मा ही ऐसे हो सकते हैं।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

समाचार

बालिका प्रवेश उत्सव में यज्ञानुष्ठान

आर्य समाज-हिरण मगरी सेक्टर-४, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का नवीन सत्र बालिका प्रवेश उत्सव के रूप में संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया के सान्निध्य में यज्ञानुष्ठान, शिव संकल्प और आशीर्वाद के साथ शुक्रवार को विद्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। विद्यालय सचिव कृष्ण कुमार सोनी ने बताया कि इन्द्र प्रकाश वैदिक के पौरोहित्य में मंत्रोच्चारण के साथ बालिकाओं के विद्यावान, आयुष्मान, संस्कारवान और आरोग्यवान होने की परमात्मा से प्रार्थना के साथ यज्ञ में आहुतियाँ दी गईं। यज्ञ में विद्यालय की सभी छात्राओं, अध्यापकों, विद्यालय प्रबन्ध समिति के सभी सदस्यों द्वारा आहुतियाँ दी गई। इस अवसर पर विद्यालय की मानद निदेशक पुष्पा सिन्धी, प्रधानाध्यापिका प्रेम लता मेनारिया, उपप्रधानाध्यापिका नाजुक भंसाली, ललिता मेहरा, भँवरलाल आर्य-प्रधान, मंत्री-वेद मित्र आर्य, रमेश चन्द्र जायसवाल, भूपेन्द्र शर्मा, नरेन्द्र माथुर, रामनिवास गदिया, आनन्द राज माथुर आदि ने छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की। अनुष्ठान में शिवसंकल्प दिलवाते हुए बालिकाओं को सूर्योदय से पहले उठने, अपने सभी बड़ों के चरण स्पर्श करने, सत्य बोलने, निन्दा, क्रोध और झगड़ा न करने, रात्रि को सोने से पहले पाँच बार गायत्री महामंत्र का जाप करने के संकल्प दिलवाये गए। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने कहा कि यज्ञ से कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सुसंस्कार बढ़ते हैं। हवन में अग्नि की ऊपर की ओर उठती हुई ज्वालायें सतत् ऊपर की ओर उठने, उसकी उष्मा सदैव ऊर्जावान बने रहने, और अग्नि का प्रकाश ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होने की प्रेरणा देता है। आभार विद्यालय सचिव कृष्ण कुमार सोनी द्वारा ज्ञापित किया गया। शान्ति पाठ और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - कृष्ण कुमार सोनी; सचिव-दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर

न्यूयार्क का आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

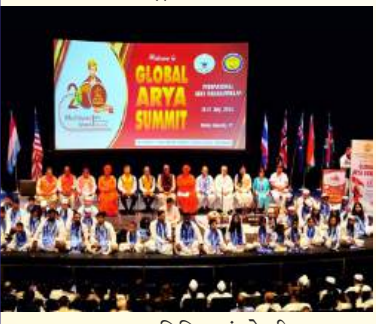

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०२४ न्यूयार्क; अमेरिका में हुआ सम्पन्न। जिसमें विश्वभर से आर्यजन, विद्वान्, संन्यासी एवं प्रमुख अधिकारीगण उपस्थित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा; अमेरिका के यशस्वी प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी एवं आर्य विद्वान् तथा महामंत्री श्री विश्रुत् आर्य जी के कुशल नेतृत्व में अलग-अलग कई सत्र आयोजित किये गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ा दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री-श्री विनय आर्य जी की उपस्थिति संगठन को मजबूती प्रदान कर रही थी। सभी अधिकारियों के साथ उनके द्वारा की गई बैठकों ने कार्यक्रम को सार्थकता प्रदान की।

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की पुण्य तिथि मनाई

दिनांक २३ जुलाई २०२४ को नवलखा महल स्थित श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती की पुण्य तिथि मनाई गई। स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती आर्य जगत् के भामाशाह थे साथ ही वे दानदाताओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी थे, ये विचार श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने व्यक्त किए। न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य ने सुन्दर कविता प्रस्तुत कर अपनी श्रद्धांजलि स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती को समर्पित की।

न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने भी स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें स्वामी जी द्वारा किए गए कार्यों का अनुसरण करना चाहिए।

न्यास के पुरोहित पण्डित नवनीत आर्य ने भी स्वामी जी के साथ बिताये सुखद एवं शिक्षात्मक क्षणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी जी एक महान् आत्मा थे, जिनसे सीखने को बहुत कुछ था। इस अवसर पर आर्य समाज पिछोली के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रकाश श्रीमाली एवं आर्य समाज हिरणमगरी के पुरोहित श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने भी स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती के संस्मरणों को प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की युवा शाखा की संयोजक- एडवोकेट श्रीमती ऋचा पीयूष ने बताया कि स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु भी कई कार्य करवाये। उनके इस कार्य से प्रेरित होकर आज उनकी पुण्य तिथि पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने

गुलाब बाग में वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में यज्ञ से हुआ।

कार्यक्रम में श्रीमती सरला गुप्ता एवं श्रीमती मनोरमा गुप्ता ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर न्यास के जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद कुमार राठौड़, कार्यालय मंत्री श्री भँवर लाल गर्ग, श्री संजय शांडिल्य, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा शाखा के श्री रवीन्द्र राठौड़, श्री सुकृत मेहरा, श्रीमती भाग्यश्री, श्रीमती दुर्गा गोरमात, श्री लोकेश, श्री देवी लाल, श्री लक्ष्मण एवं उदयपुर के आर्य समाज के कार्यकर्त्ता मौजूद थे।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती ऋचा पीयूष द्वारा किया गया।

- भंवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री-न्यास

हलचल

उम्र केवल एक नम्बर है

कौन सोच सकता है कि ५८ वर्ष की उम्र में कोई महिला अपने गृहस्थ की सारी जिम्मेदारियों को निभाने के पश्चात् उनसे मुक्त होने पर पहली बार तैराकी सीखने जाय और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते। जी हाँ यह कर दिखाया है सूरत की बकुला बेन पटेल ने।

गुजरात के सूरत की रहने वाली बकुलाबेन पटेल ने छोटी उम्र में ही अपने माता-पिता को खो दिया, और इस वजह से उनकी पढ़ाई रुक गई। तदनन्तर रिश्तदारों के यहाँ पली-बढ़ीं इसलिए अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाईं।

बचपन से ही उनकी रुचि खेल-कूद में थी। लेकिन उसमें भी आगे नहीं बढ़ पाईं। बकुलाबेन सिर्फ़ ६वीं क्लास में थीं जब उनकी शादी हो गई! ५० की उम्र तक गाँव में रहते हुए उन्होंने अपने घर-परिवार को बखूबी सम्भाला।

१९९४ में उनके पति का निधन हो गया। इसके बाद पोते-पोती से प्रेरणा लेकर बकुलाबेन ने भी एथलेटिक्स शुरू किया। ५६ की उम्र में उन्हें स्विमिंग में दिलचस्पी हुई और उन्होंने इसकी ट्रेनिंग लेनी शुरू कर दी। लोग आश्चर्य से देखते थे लेकिन बकुलाबेन ने इसकी फिक्र किए बिना सीखना जारी रखा। आज वह ८० साल की हैं और १६ देशों में स्विमिंग कर चुकी हैं। नेशनल और इण्टरनेशनल लेवल पर वह अब तक ५०० से ज्यादा मेडल्स और ट्रॉफीज जीत चुकी हैं।

बकुलाबेन क्लासिकल डांस में भी माहिर हैं। फिलहाल वह भरतनाट्यम में MA कर रही हैं और ७५ साल की उम्र में ढाई घण्टे स्टेज पर प्रदर्शन करके लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी अपना नाम दर्ज करा चुकी हैं।

इस प्रकार बकुला बेन ने प्रमाणित कर दिया कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। यह आपके हौंसले पर निर्भर करता है। - साभार- बेटर इण्डिया

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा छात्राओं को गणवेश वितरित

आर्य समाज; हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय के २०२४-२५ अकादमिक सत्र में प्री नर्सरी से कक्षा ८ तक २०३ छात्राओं ने प्रवेश लिया।

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त कक्षा १ से ८ तक की १४५ छात्राओं को विद्यालयी गणवेश वितरित किया गया। इस अवसर पर प्रो. अमृतलाल तापड़िया, श्री भँवर लाल आर्य, श्रीमती ललिता मेहरा, श्रीमती पुष्पा सिन्धी एवं विद्यालय की अध्यापिकाएँ उपस्थित थीं। - भँवर लाल आर्य; प्रधान-आर्य समाज

आर्य समाज महरौली का उत्सव सम्पन्न

२६ जुलाई २०२४, आर्य समाज महरौली नई दिल्ली का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य योगेश आर्य ने यज्ञ करवाया। बिजनौर के पण्डित नरेश दत्त आर्य व पण्डित अंकित उपाध्याय के मधुर भजन हुए।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने आह्वान किया कि समस्त हिन्दू समाज जात-पात से ऊपर उठकर संगठित हो तभी समस्याओं का समाधान सम्भव है। उन्होंने कहा कि यज्ञ और योग सबके लिए समान है इस पर कोई विवाद नहीं है इन दोनों बिन्दुओं पर ओ३म् ध्वज लेकर बहुत कार्य किया जा सकता है। प्रजातंत्र में संगठित वोट बैंक ही देश के भविष्य का भाग्य तय करते हैं जो कि हाल ही के चुनावों में सिद्ध हो चुका है। वेद कहता है 'शक्ति मेव जयते, वीर भोग्या वसुन्धरा' इसलिए जब मन्दिर जाते हैं तो सभी देवी-देवता कोई तलवार, फरसा, धनुष, सुदर्शन चक्र, भाला आदि लेकर बल व उपासना का स्वयं संदेश दे रहे हैं। यदि अब भी नही सम्भले तो हिन्दू दूसरे दर्जे का नागरिक बन कर रह जाएगा। समारोह का कुशल संचालन प्रधान वेद खट्टर तथा मंत्री अजय खट्टर ने किया।

आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, श्यामलाल आर्य, प्रियव्रत आर्य, ओम प्रकाश यजुर्वेदी, रवीन्द्र आर्य, आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

पूर्व महापौर सविता चौधरी, बलराज सेजवाल, नन्दलाल कालरा, नरेन्द्र कालरा, भगवानदास मेहता, सुरेन्द्र गुप्ता, संजीव हंस, सुनील घावरी, विनोद खट्टर, प्रदीप घावरी आदि उपस्थित थे। - प्रवीण आर्य; मीडिया प्रभारी

वेद मन्दिर में मनाया गया आ. प्रेमभिक्षु जी का जन्म शताब्दी समारोह

योग गुरु स्वामी रामदेव ने कहा है कि वह लगभग ३३ वर्ष पहले वेद मन्दिर; मथुरा में महाभाष्य पढ़ने के लिए आए थे। आज वे जो कुछ भी हैं सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द की बदौलत हैं।

यह बात उन्होंने मसानी चौराहे पर स्थित गुरु विरजानन्द आर्य गुरुकुल वेद मन्दिर; मथुरा में आर्य समाज के लेखक आचार्य प्रेमभिक्षु जी महाराज की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि आचार्य प्रेमभिक्षु का जीवन तपस्वी व त्यागमयी था। युवा पीढ़ी को इनकी विचारधारा से प्रेरणा लेनी चाहिए। आचरण की पवित्रता ही सबसे बड़ा धर्म है। महर्षि दयानन्द का अनुयायी होने की यह पहली शर्त भी है। कर्म में आचरण की पवित्रता नहीं है तो नाम जप का कोई फायदा नहीं होता है।

सबसे बड़ी पूजा अग्निहोत्र या हवन है। सभी को दैनिक या साप्ताहिक हवन अवश्य करना चाहिए। वेद मन्दिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश ने स्वामी रामदेव का अभिनन्दन किया।

इसके बाद आचार्य प्रेमभिक्षु के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्वामी रामदेव को सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक भेंट की गई और आर्यवीर दल के कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में आचार्य महिपाल, स्वामी इन्द्रेश्वरानन्द, आचार्य नरेन्द्रानन्द, आचार्य सत्यप्रिय आर्य, विधायक राजेश चौधरी, प्रवीन अग्रवाल, वीरेन्द्र अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

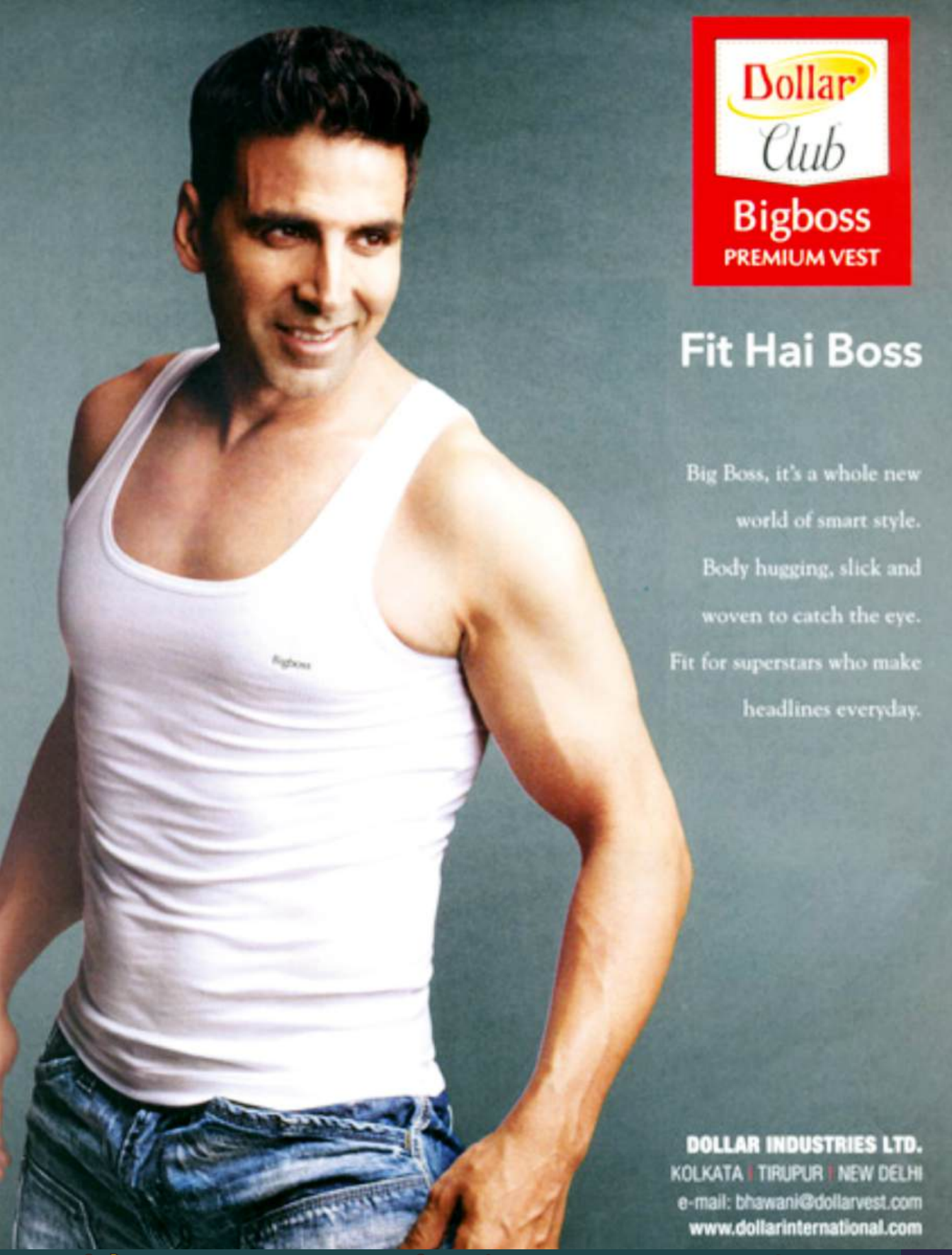
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जिस भृत्यसहित देखते हुए राजा के राज्य में से डाकू लोग रोती-विलाप करती प्रजा के पदार्थ और प्राणों को हरते रहते हैं, वह जानो, भृत्य-अमात्य सहित मृतक है, जीता नहीं और महादुःख का पाने वाला है। इसलिये राजाओं का प्रजा-पालन ही करना परमधर्म है।

- सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १५७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर